28-76

प्रेम पत्र



रैगींग करने वालो,

गुड मार्निंग

यह जान कर जान में जान ग्रायी की जुलाई में स्कूल ग्रौर कालिज खुल जायेंगे ग्रौर उसमें नये-नये वजर बट्टू ग्रौर तितलियाँ नई क्लासों में पढ़ने ग्रा जायेंगी।

पिछले दिनों फैशन भी बदल गये हैं इसलिये इस बार तितलियां ग्रौर भी रंगीन होंगी। लड़के भी ज्यादातर कुर्त्ते, पजामे त्यागकर, 'जीन' की पैण्ट ग्रौर खुली छाती की बुशर्ट में नजर ग्रायेंगे। कुछ यह सोचकर कालिज पहुंचेंगे कि वह 'हीरो' हैं, कुछ ग्रपने ग्रापको मजनूं ग्रथवा रोमियो समझकर कालिज में मस्तानी चाल चलेंगे। मैं भी क्योंकि बहुत पुराना 'दीवाना' हूं इसलिये सब दीवाने मस्तकों को खबरदार कर देना चाहता हूँ कि इसबार रैगींग का ख्याल करना भी खतरे से खाली नहीं होगा। पहले तो केवल किसी सुन्दरी की सैंडिल का खतरा होता था पर ग्रबकिसी संतरी जी की लाठी का भी खतरा होगा।

इसलिये मेरा सुझाव है कि हर रोमियों को चाहिये कि तितलियों को छोड़कर इस बार दूसरे 'रोमियो' का पीछा करें।

बड़ी तितलियों को चाहिये की छोटी तितलियों को न सतायें। क्योंकि इस बार तितलियों के लिये भी जेल के दरवाजे खुले रक्खे जाएंगे।

यदि 'रैगींग' केवल मानसिक हो तो शायद कोई खतरा न बने। इसलिये एक दो सुझाव ग्रापकी सेवा में रखना चाहता हूं।

१. सबसे पहले तो ग्राप इस बात पर जोर दें कि हर नया छात्र 'दीवाना' पढ़कर ग्रापको सुनाए। इससे ग्रापको उनकी ग्रावाज चिल्ली के 'स्वर' में सुनने का ग्रवसर मिलेगा।

२. इसके बाद ग्राप उनसे १०० तक पहाड़े सुनें, पहाड़े याद करने से हिसाब में नम्बर ग्रच्छे ग्रायेंगे।

३. इसके बाद ग्राप उनसे वायदा करायें कि ग्रागे के सपने नहीं देखेंगे। सपने न देखने का सबसे ग्रच्छा तरीका यह है कि हर छात्र रात को तारे गिना करे।

ग्रापका चिल्ली

दो दीवानों की बातें

★ ग्राग्रो, दीवाना के मुख पृष्ठ में दीवानापन ढूंढें।

★ हां, हमारा तो काम ही दूसरों के गिरेबान में झांकना ग्रौर दीवानगियां ढूंढ़ना है।

★ पहली दीवानगी तो भगवान ने की है, जो उसने चिल्ली को बनाया है।

★ चिल्ली बड़ा चालबाज है। खुद तो कहीं बंधता नहीं, ग्रपने साथियों को खूंटे से बंधा छोड़ गया है।

★ गुब्बारे वाले को चिल्ली के पेट में हवा भरने के पैसे भी नहीं मिले हैं। इसीलिये वह रो रहा है।

★ चेला राम ग्रपनी दुम के बगैर ग्रधूरा है।

★ डाक्टर झटका ग्रपनी ग्रांखों में नींबू का ग्रचार डालना भूल गये हैं।

★ घसीटा राम की मूंछ में कोई बीस साल के तजुर्बे वाला खटमल घुसा हुग्रा है।

★ [illegible] सिलबिल पिलपिल, परोपकारी, सब की हवा खराब है ग्रौर कुछ समझ [illegible] है।

[illegible]ऐसी ही कुछ लल्लू पंजू दीवानगियां ग्रापको भी समझ





सम्पादक: विश्व बन्धु गुप्ता
सहसम्पादिका: मंजुल गुप्ता
[illegible]पसम्पादक: कृपा शंकर भारद्वाज
[illegible]ना तेज साप्ताहिक
बहादुरशाह ज़फर मार्ग,
नई दिल्ली-१

चंदे की दरें—
छमाही : २५/- रु०
वार्षिक : ४८/- रु०
द्विवार्षिक : ९५/- रु०

लेखकों से

निवेदन है कि वह हमें हास्यप्रद, मौलिक एवं ग्रप्रकाशित लघु कथायें लिखकर भेजें। हर प्रकाशित कथा पर 15 रु० प्रति पेज पारिश्रमिक दिया जायेगा। रचना के साथ स्वीकृति/ग्रस्वीकृति की सूचना के लिये पर्याप्त डाक टिकट लगा व पता लिखा लिफाफा संलग्न करना न भूलें। —सं०



आपस की बातें

चचा बातूनी की कलम दवात से

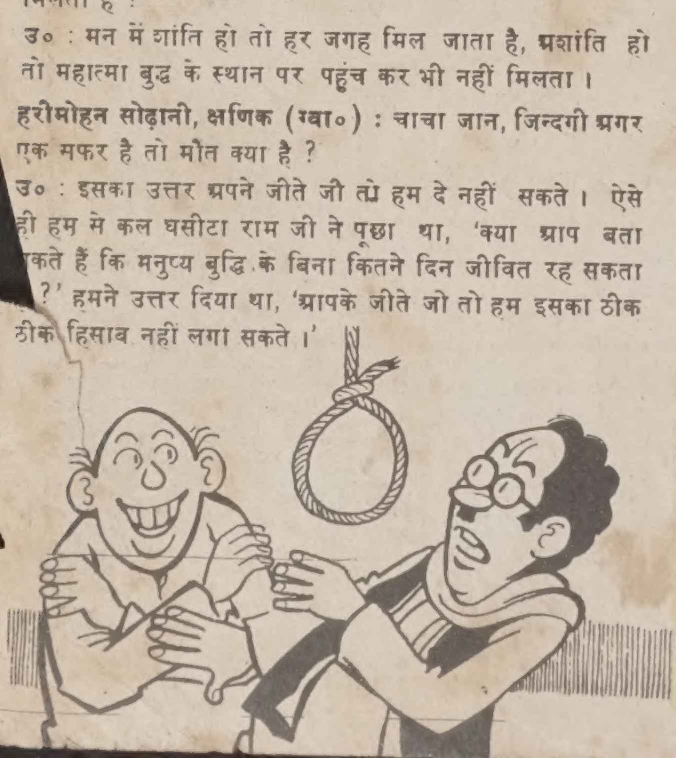
एस० मन्जूर हसन 'कादरी', बीकानेर : दीवाना के सभी जोकरों के दो-दो दांत हैं, तो फिर आपके मुंह में पूरी बत्तीसी क्यों है ?
उ० : इसी बात से तो हम परेशान हैं कि पूरी बत्तीसी क्यों है। क्योंकि दूसरे जोकर दो दांतों से जितनी जोर से काटते हैं हम पूरे बत्तीस दाँतों से नहीं काट सकते। आप कभी चिल्ली के मुँह में हाथ देकर तो देखिये।

प्रेम चन्द जैन, अम्बाला कैंट : क्या किसी मूर्ख की मूर्खता पर गुस्सा करना चाहिए ?
उ० : यह तो अपने-अपने स्वाभाव पर निर्भर है। एक बार एक व्यक्ति ने अपने एक मित्र की मृत्यु पर अपने लड़के को शोक प्रकट करने के लिए भेज दिया, लड़के ने वहां पहुंच कर मृतक के किसी रिश्तेदार से कहा, 'इस घर का दरवाज़ा इतना छोटा है, इसमें से अर्थी कैसे निकलेगी ?' लड़के की इस बात का वहां बहुत बुरा मनाया गया। होते-होते यह बात लड़के के पिता तक पहुंची, तो वह लड़के की मूर्खता पर खेद प्रकट करने मृतक मित्र के पास पहुंचा और उसके सम्बधियों से बोला, 'लड़का मूर्ख है, उसकी बात का बुरा मत मानना, घर का दरवाज़ा तो इतना चौड़ा है कि एक अर्थी तो क्या इसमें से पूरे परिवार की अर्थियां एक साथ निकल सकती हैं।

कमल पंकज फिरोजपुर कैंट : खटमल चुपके से काटकर चला जाता है, फिर मच्छर क्यों शोर मचाता है ?
उ० : इस बात पर खुशी मनाने के लिये कि मैं आदमी के काट सकता हूं। आदमी गुस्से में आकर मुझे मार तो सकता है, पर मेरे काट नहीं सकता।

प्रहलाद जसवानी, कृष्ण कन्हैया, मण्डला : मनुष्य को चैन कहां मिलता है ?
उ० : मन में शांति हो तो हर जगह मिल जाता है, अशांति हो तो महात्मा बुद्ध के स्थान पर पहुंच कर भी नहीं मिलता।

हरीमोहन सोढ़ानी, क्षणिक (ग्वा०) : चाचा जान, जिन्दगी अगर एक सफर है तो मौत क्या है ?
उ० : इसका उत्तर अपने जीते जी तो हम दे नहीं सकते। ऐसे ही हम से कल घसीटा राम जी ने पूछा था, 'क्या आप बता सकते हैं कि मनुष्य बुद्धि के बिना कितने दिन जीवित रह सकता है ?' हमने उत्तर दिया था, 'आपके जीते जो तो हम इसका ठीक ठीक हिसाब नहीं लगा सकते।'



सलीम मोहियोद्दीन, परभाणी : मैं एक फिल्म बना रहा हूं जिसमें आप हीरो हों, चेलाराम हीरोइन, और पतलू, डा० झटका, घसीटा राम और अन्य सभी काम करें और उसमें चिल्ली का संगीत हो।
उ० : पर इस फिल्म को वही सिनेमा वाले चलायेंगे हाल की कुर्सियां प्यारी न होंगी।

बिनोद पुरी, लुधियाना : चाचा जी, जीवन में डरना होता है ?
उ० : जब सामने वाले का बाहुबल कमीज की बांह भी देखा जा सकता हो।



अमरजीत सिंह बूंगी, आहुजा नगर, अबोहर : गम पीना चाहिए ?
उ० : आंसू। अबोहर में इनकी कमी हो तो हम भिजवा दें।

सतीश गुलाटी, सब्जी मंडी, कैथल : यदि मोटू, पतलू, पिलपिल, घसीटा राम तथा चिल्ली को ओलम्पिक में के लिए भेज दिया जाये तो कैसा रहे ?
उ० : अगर वहां, कंचे, सांप सीढ़ी, लूडो, गुल्ली डंडा बाजी का मुकाबला हो तो हमारे जोकरों से वहां कोई सकता।

शीतल कुमार शर्मा, दिल्ली : चाचा जी, क्या हमा प्यारा चिल्ली आजन्म कुंवारा ही रहेगा ?
उ० : उसका चंचल मन इस बात पर टिकता ही नहीं

विजय कुमार, केसरी सिंह पुर : चाचा जी, मुझे मोटू का एक बाल भेजने का कष्ट करें। मैंने सुना है, 'जहां की मूंछ का बाल, वह हो जाएगा माला माल।'
उ० : समझ में नहीं आई आपकी बात। मोटू के मुंह प किलो बाल हैं उसकी मूछों के। वह खुद तो माला म नहीं है अब तक। कोई एक खास बाल ऐसा है आप हमें बता दें।

संजीव कुमार, फरीदपुर : क्या मैंने का पांव आपके सर पर है, या
उ० : ठीक सुना है आपने।

राकेश कुमार बुआ, दिल्ल आपको प्रश्नों के उत्तर
उ० : हमारे दिमाग भरे हैं। जब हम के जवाब में एक बाहर निकल

...रोपकारी


दीनानाथ कभी नहीं मानेगा और वही एक ऐसा आदमी है जो ५०० रु० दे सकता है।
वे फिकर रहो पंडित जी, आपके मन्दिर की मरम्मत जरूर होगी। मैं अभी जाता हूँ उस बुड्ढे के पास !
दीनानाथ है तो महा कंजूस परन्तु भगवान के लिये तो जरूर चन्दा देगा।
...थ जी मैं आप ...दर के लिए ...लेने आया हूं।
...तो परोपकारी तुम ...जाओ वापस !
नहीं दीनानाथ जी ऐसा न कहो। आप मुझे जानते हैं, मैं कोई जालसाज नहीं। मैं आपके पैसे भगवान को अर्पित करूंगा।
हां सो तो है। तुम हो तो ईमानदार......
...न्तु एक वात वताओ ...म्हारी उम्र क्या है ?
इसलिए कि मैं ७० वर्ष का हूं। मैं तुमसे पहले भगवान को मिलूंगा और मैं जब मिलूंगा तो खुद ही पैसे अर्पित कर दूंगा।
NAIVE


कहिये सुकीलकार साहब मेरी गजल आपको कैसी लगी ?
आपकी गजल का आखिरी शेर मुझे बहुत पसन्द आया !
सच ! आपको आखिरी शेर क्यों पसंद आया ?
क्योंकि आपकी बोर गजल का आखिरी शेर था।

अनोखा पत्र



यह पत्र किसी सास ने अपनी बहू के नाम लिखा है जो अपने मैके गई हुई है। पत्र पर पता यूं लिखा था : लिल्ली, ८-ब, बहादुर गली, नई दिल्ली। डाकिया दीवाना की दीवानगी में उलझ गया और लिल्ली की बजाय चिल्ली समझ कर बहादुरशाह जफर मार्ग पहुंच गया और यह पत्र चिल्ली साहब को थमा दिया। पत्र पढ़ने पर पता चला कि सास-बहू की वही पुरानी नोंक-झोंक इस पत्र में विराजमान है। पूरा पत्र पढ़ने पर पता चलता है कि सास ने बहू की खटिया खड़ी कर रखी है। लेकिन एक पंक्ति छोड़ कर अर्थात् केवल बिन्दियों वाली पंक्तियों को पढ़ने पर आपको स्वयं मालूम हो जायेगा कि सास के दिल के कोने में अपनी बहू के प्रति कितना प्यार छिपा है?

मेरी प्यारी बहू लिल्ली

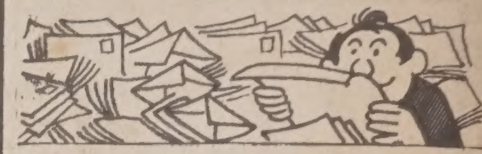
जीती रहो!

● जब से तुम इस घर से गई हो तब से इस घर में
शान्ति छा गई है। बर्तनों की चीखें बन्द हो गई हैं रसोई में
● वीरानगी-सी छा गई है। तुम्हारे बिना इस घर में मेरा दिल
खुश रहता है। तुम्हारी रोज की लड़ाई और हाथापाई में मेरा मन
● नहीं लगता। कोई साक्षात तुम्हें भुगते तो यही कहे कि बहू का स्वभाव ही इतना
कटखना है कि मत पूछो। पड़ोस की बहू कहती है कि तुम्हारा स्वभाव इतना
● अच्छा है कि हर एक का दिल जीत लेती हो। जैसे भी हो जरा जल्दी ही
लौटने का प्रोग्राम मत बनाना। तीन सौ चौंसठ दिन मैके रहके फिर
● लौट आना। बहू क्या बताऊं? तुम्हारे जाने के बाद तो हमारा यह घर
स्वर्ग बन गया है। मुझे सोचकर आनन्द आता है कि तुम्हारी मां का घर अब
● नर्क बन गया है। मैंने अपने पिछले जन्म में जरूर मोती दान
नहीं किये होंगे। वरना मुझे तुम जैसी डायन बहू नहीं मिलती। मैंने जरूर पाप
● किये होंगे तभी तुम जैसी बहू मिली है। हमारा कुत्ता टॉनी है ना बेचारा
जिसका दूध तुम पी जाती थीं और उसे सूखी रोटी देती थीं। वह
● तुम्हारी याद में दिन-रात उदास बैठा रहता है। मेरे बेटे के तो भाग्य ही
फूट गये। बेलन खा-खा कर भी वह यही कहता है कि उसके भाग्य
● खुल गये तुम जैसी पत्नी पाकर। हर सास को तुम्हारी जैसी
लड़ाकू बहू मिल जाये तो वह आत्महत्या कर ले। इसलिए हर सास को
● प्यारी बहू मिले, यही मैं दुआ करती हूं। पत्र मिलते ही वापसी के लिये
मत चल देना। अपनी मां की छाती पर कुछ दिन मूंग और दलो फिर
● चल पड़ना।

प्रतीक्षा में

तुम्हारी सास।

आपके पत्र



मैं आपको यह पहला पत्र लिख रहा हूं वह भी इसलिए कि आपकी पत्रिका 'दीवाना' ने मुझे सचमुच दीवाना बना दिया।

'दीवाना' में मुझे मोटू-पतलू, सिलबिल पिलपिल, मदहोश तथा परोपकारी अंकल अत्याधिक पसंद आते हैं। 'दीवाना' पत्रिका अब सम्पूर्ण हास्य-पत्रिका है, इसमें कोई सन्देह नहीं। और अच्छा होगा कि आप इसमें जेम्स बॉण्ड अथवा माकड़ जासूस फिर से शुरू कर दें। चिल्ली साहब की मोटू-पतलू से दोस्ती होने पर हमारी ओर से शुभकामनाएं। **दिनेश सोलंकी—महू (म. प्र.)**

हस्य व्यंग दीवाना का अंक २६ मिला, इस बन्दर महिमा अंक को पढ़कर इतना मजा आया की मैं खुद ही अपनी हालत का अन्दाजा नहीं लगा सकता। इस अंक में 'महापुरुषों के वचन और दीवाने जवाब' काफी हद तक हमारा मनोरंजन कर गए। वैसे 'अनोखा पत्र', 'मदहोश' भी काफी सराहनीय रहे। काग़ज पर बनी फिल्म 'मोटू पतलू' 'बहुत ही मजेदार रही। काश आप मनोरंजन स्ट्रीट फिर से शुरू कर दें। 'आपस की बातें' प्रश्न उत्तर स्तम्भ में अगर हमारे प्रश्नों के उत्तर घसीटा राम जी दें तो दीवाना में चार चांद लग जाएं!

एम० एच० कादरी 'सैयद'—बीकानेर

मैं दीवाना का नया ग्राहक हूं। दीवाना के मेरे पास दो अंक आ चुके हैं दोनों एक से एक बढ़कर लाजवाब हैं। "भगवान तेरी माया कहीं धूप कहीं छाया," मोटू-पतलू, और मुख पृष्ठ लाजवाब रहा। मैं आजमा चुका हूं कि दीवाना में प्रकाशित 'साप्ताहिक भविष्य' सत प्रतिशत सच उतरता है। अगले अंक का बेसब्री से इन्तजार है।

—घनश्याम अग्रवाल, लैलूंगा (रायगढ़) म. प्र.

दीवाना का २५वाँ अंक हंसी का खजाना लिये हुये हस्तगत हुआ। मुख पृष्ठ पर चिल्ली को जंजीर तोड़ते देख आश्चर्य हुआ लेकिन पृष्ठ पलट कर देखा तो जलेबियों की जंजीर देखकर मुंह में पानी भर गया।

'परोपकारी' के साथ नहाने की इच्छा थी लेकिन हम 'मदहोश' की तरह ही मदहोश थे। अतः हम शीघ्र ही 'मोटू-पतलू' के पास पहुंच गए फिर सिलबिल-पिलपिल भी हमारे साथ आ मिले तो हम हंस-हंस कर दीवाना हो गये। फिल्म पैरोडी 'चरस', व कहानी 'बगुलों का शहर' पसन्द आई। उपन्यास 'लखपति भिखारी' शुरू से ही रोचक है। आशा है 'दीवाना' का अगला अंक भी मनोरंजक होगा।

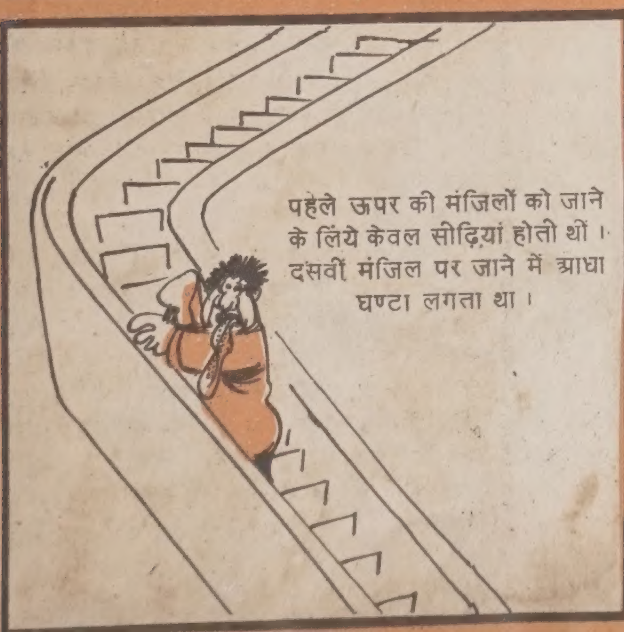
—राजेश भाटिया—पानीपत

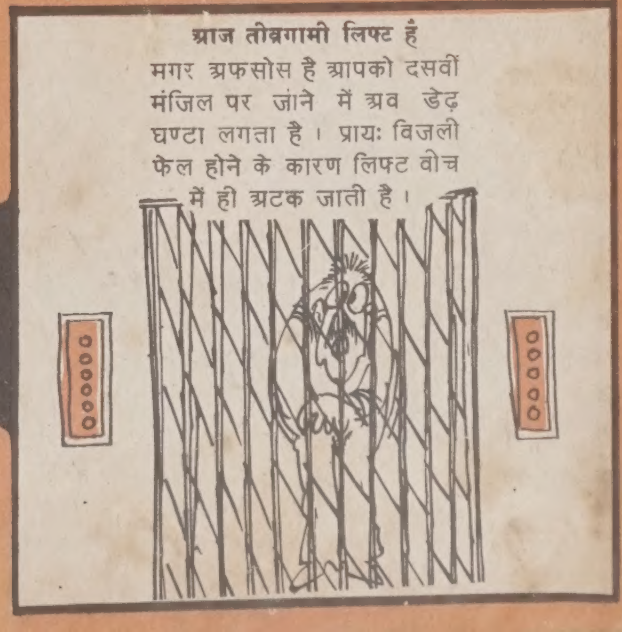
कहाँ जा रहे थे कहाँ आ गये हम

पहले और अब में कितना अन्तर आ गया है ? रहन-सहन में जमीन आसमान का फर्क है, कई सुविधायें जो आज हमें उपलब्ध हैं वह पहले नहीं थीं । मगर अफसोस है !










पहले वाहन नहीं थे
पैदल ही सफर करना पड़ता था।
आज कारें हैं आने जाने में समय की बचत होती हैं
मगर अफसोस है उमर में भी बचत होती है। पहले लोग १०० साल जीते थे, अब एक्सीडेंट के कारण कार मालिक ३०-४० साल पहले ही चल बसते हैं।
जिम्बो का भतीजा
पहले टी. वी. नहीं था घटिया पिक्चर देखने के लिये भी लाइन में खड़े रह कर टिकट खरीदना पड़ता था थियेटर में।
जिम्बो का भतीजा
आज घटिया फिल्में टी. वी. के कारण आप घर बैठे देख सकते हैं। मगर अफसोस है यह सिर दर्द आपको ४-५ हजार रुपये में मोल लेना पड़ता है।
हे राम !
डॉगधर
पहले टेलीफोन नहीं थे
किसी को अचानक दौरा पड़े तो डाक्टर को लेकर आने तक मरीज चल बसता था।
आज टेलीफोन है
फौरन डाक्टर को डायल करें। मगर अफसोस है कि अब भी मरीज चल बसता है, डाक्टर का नम्बर मिलने में इतनी देरी होती है।
हे राम !


पहले आप वजन करना चाहते तो केवल बस लकड़ी व कोयले के डिपो पर जाना पड़ता था जहां डिपो का मालिक आपको खरी-खोटी सुना बैरंग लौटा देता था।
आज जगह-जगह वजन की मशीनें हैं
मगर अफसोस है कि आज भी आप अपना वजन नहीं कर पाते। प्रायः मशीनें खराब पड़ी रहती हैं, दस पैसे भी बेकार चले जाते हैं।
पहले लाऊड स्पीकर नहीं थे
वक्ता का गला जोर से बोल कर दुखने लगता था।
आज लाऊड स्पीकर ह
मगर अफसोस है कि गला न दुखने के कारण वक्ता ज्यादा देर लेक्चर देता है। पब्लिक बोर होकर जूते-पत्थर मारती है तो वक्ता का सारा शरीर दुखने लगता है।
पहले इलैक्ट्रिक शेवर नहीं थे
रेजर से हजामत बनाते समय चेहरा लहू-लुहान हो जाता था।
आज इलैक्ट्रिक शेवर है
चेहरा लहू-लुहान नहीं होता मगर अफसोस है कि शॉक लगने पर सारा खून चूस जाता है।


किच्चा किच्चा किच्चा
पहले मिक्सी नहीं थी
सिल बट्टे पर मसाला पीसने से घर भर में भौंडी आवाज गूंजती थी ।
आज मिक्सी है
मगर अफसोस है मिक्सी चलाने पर आज भी रेडियो से वैसी ही आवाज आती है ।
GRRRA
पहले कुकर नहीं था
औरतें दिन भर चूल्हे के पास रहतीं, उन्हें साज सिंगार का समय नहीं मिलता था और वह भूतनी नजर आती थीं ।
आज कुकर के कारण गृहणियों के पास सिंगार का काफी समय है
मगर अफसोस है कुकर आज भी उन्हें जला कर भूतनी की अम्मां बना देता है ।
पहले हास्य साहित्य नहीं था
घटिया लतीफे पढ़-पढ़ कर लोग बोर होकर माथा पीटते रहते थे ।
अकबर बीरबल
आज दीवाना जैसी हास्य पत्रिकायें हैं
मगर अफसोस है कि दीवाना में भी कभी-कभी इस फीचर जैसी बोर रचनायें गलती से छप जाती हैं और लोग अब भी माथा पीटते हैं ।
दीवाना

फाल्गुन का महीना

चौहान राजवंश का सबसे पुराना राज्य बून्दी है । इस राज्य के बीचोंबीच आडावाल पहाड़ है । जो इस राज्य को बराबर दो हिस्सों में बांट देता है, दक्षिण का समतल बहुत उपजाऊ है, इस राज्य में पांच प्रसिद्ध घाटियां हैं, इन्हीं में से एक घाटी में जहां से कि चम्बल नदी की सहायक नदी मेज पहाड़ को काटती हुई उत्तर से दक्षिण की ओर जाती है, इस नदी से लगता एक बड़गांव नामक गांव है, इस गांव की अधिकतर आबादी उज्ज्वल मीणों की है । मीणे दो प्रकार के होते हैं, उज्ज्वल और मैले । उज्ज्वल गाय, बैल आदि का मांस नहीं खाते और मैले इनका प्रयोग करते हैं । दोनों ही बहुत वीर और मेहनती होते है । आज लगभग ६२६ साल पूर्व इन्हीं मीणाओं की गणतन्त्रीय प्रणाली समाप्त कर सन् १३४० में राव देवा हाड़ा ने बून्दी पर अपना शासन कायम किया, किन्तु बड़गांव के मीणों की बहादुरी पर मुग्ध होकर राव देवा हाड़ा ने बड़गांव का सामन्त वहां का ही एक मीणा नियुक्त कर दिया । और उसे यह अधिकार दे दिया कि उसका ही पुत्र उसके बाद यहां का सामन्त बनेगा और जब तक उसका वंश रहेगा तब तक यहां की सामन्ती पर ही उस का अधिकार रहेगा । मन ही मन में मीणा राजा के खिलाफ रहते थे, किन्तु विद्रोह करने का उन्हें साहस नहीं हो पाता था । समय निरन्तर गति से चलता रहा । सन् १६०७ में राव रतन हाड़ा अपने पिता भोज की मृत्यु के बाद सिंहासन पर बैठा । यह बहुत बहादुर तथा न्यायप्रिय था । राव रतन का ज्येष्ठ पुत्र गोपीनाथ अपने पिता की अपेक्षा विलासप्रिय अधिक था । यह अधिकतर बड़गांव से दस मील तथा बून्दी से चार मील दूर फूलसागर नामक निवास स्थल पर रहता था । जहां कि बून्दी नरेश गर्मियों में निवास करने के लिए आते हैं । यह फूलसागर कनकसागर नामक झील के तट पर है । पूनम की चांदनी में इसकी छटा देखते ही बनती है । गोपीनाथ अधिकतर यहीं रहता था ।

एक दिन की बात है, गर्मी के दिन थे । गोपीनाथ सुवासित पलंग पर लेटा वीणा और मृदंग की सम्मिलित झंकार से आनन्दित हो रहा था । उसके आरामगाह में ऐसे वक्त किसी को भी आने की आज्ञा नहीं रहती थी । एक बांदी ने आकर दरवाजे पर दस्तक दी, गोपीनाथ ने क्रोधित स्वर में कहा—

'कौन है ?'

'दासी है श्रीमान जी !'

'नयना !' देखो तो ऐसे वक्त यह कौन सी मुसीबत है ?' गोपीनाथ के पास से एक परम नवयौवना सुन्दरी उठी और मदमस्त चाल से दरवाजा खोल दिया । एक दासी ने अन्दर प्रवेश किया, पलंग के पास



आते ही उसने मुगलिया अन्दाज से तीन बार कोर्निस की । गोपीनाथ ने प्रश्नसूचक दृष्टि से उसकी ओर देखा ।

'महाराज कुमार ! मेवाड़ का एक संदेशवाहक श्रीमान् के दर्शन चाहता है ।'

'भेज दो ।'

उसने आस-पास बैठी युवतियों को जाने का इशारा किया । चन्द क्षण में ही कक्ष खाली हो गया । एक दीर्घकाय पुरुष ने प्रवेश किया, तथा वह भी दासी की तरह तीन बार झुका, फिर एक कपड़े की तहरीर गोपीनाथ की ओर बढ़ा दी । गोपीनाथ ने उसे खोला तथा ध्यान से पढ़ने लगा ।

प्रिय मित्र,

काफी दिनों बाद पत्र लिख रहा हूं, तुम पहले भी दो बार मेरे साथ शिकार खेल चुके हो । अब की बार में बून्दी के जंगल में तुम्हारे साथ शिकार को जाना चाहता हूं, लिखना कि कब आओगे ? मैं बागदा के पास इन्तजार करूँगा । मैं गुप्त रूप में आऊंगा, क्योंकि तुम जानते हो कि पिताजी, तुम्हारे साथ शिकार को जाने की आज्ञा नहीं देंगे ।

तुम्हारा मित्र
छत्रसिंह

गोपीनाथ ने उसे पढ़ा और पास ही पड़ी तिपाई पर रख दिया । उस सन्देश वाहक को कहा—'तुम जाओ तुम्हारे रहने का इन्तजाम हो जायेगा कल उत्तर लेकर जाना । संदेशवाहक झुककर वापस चला गया । गोपीनाथ थोड़ी देर इधर-उधर टहलता रहा । फिर उसने घोड़ा तैयार करने को कहा, और तैयार होकर बूंदी चला पड़ा । बड़ी तेजी से वह बूंदी की ओर बढ़ रहा था । महल के सामने आकर उसने घोड़ा छोड़ दिया, एक प्रहरी ने आकर घोड़ा थाम लिया गोपीनाथ आगे बढ़ गया, महल में आकर उसने अपनी माता जी को प्रणाम किया ।

'बेटा इतनी जल्दी वापस आ गये तुम्हें तो तुम्हारे पिता ने डाकू दरियाव खां का दमन करने भेजा था ।'

'वह तो हो जायेगा, मैं शिकार के लिए जाना चाहता हूं ।'

'कहां ?'

'दुगारी के पार वाले जंगल में ।'

'किसके साथ ?'

'छत्रसिंह ।'

'छत्रसिंह मैं इस चीज की आज्ञा नहीं दे सकती । रावजी को पूछकर जाना ।'

'ठीक है ।'

वह क्रोध से बाहर निकल गया, सीधा

अपने पिता के कक्ष में पहुंचा। उस समय वह राव रतनजी अपने सरदारों के साथ मंत्रणा कर रहे थे। आज्ञा लेकर वह अन्दर आया।

राव रतन सिंह उस समय बड़े क्रोध में थे, उन्होंने राजकुमार की ओर कोई ध्यान न देकर दुगारी के सामन्त से कहा...

'आज ही फर्मान रवाना कर दो। यह कैसे हो सकता है कि एक मुसलमान हमारे सरदार की लड़की का अपहरण करने की कोशिश करे।

'महाराज ! एक अर्ज और है ?'

'कहो।'

'लुटेरे दरियाव खां ने राज्य में अशान्ति मचा रखी है।'

'वह अभी तक जिंदा है ?' राव रतन ने गोपीनाथ की ओर देखकर कहा।

'पिताजी, वह काम तो हो जायेगा।'

'कब हो जायेगा ?'

'चन्द दिनों में।'

'यह काम जल्दी से जल्दी हो जाना चाहिये।'

'मैं एक आज्ञा चाहता हूं।'

'क्या ?'

सत्य शकुन

'मैं उदयपुर के कुमार छत्रसिंह के साथ शिकार को जाना चाहता हूं।'

'चले जाना।'

'ठहरिये महाराज !' सामन्त इन्द्रसिंह ने कहा।

'क्या बात है ?'

'आप भूल रहे हैं कि यह महीना फाल्गुन है और इस महीने में सिसोदिया और हाड़ा वंश के किसी न किसी वीर की जान जाती है।'

'यह आवश्यक तो नहीं हम तो मित्र हैं।'

'महाराज कुमार माफ करना, राव सूरजमल जी तथा राणा रत्नसिंह तो आपस में संमन्धी थे किन्तु प्रकृति ने दोनों की बलि ले ली। कहते हैं कि राणा रत्नसिंह ने राव सूरजमल जी को शिकार में निमन्त्रित किया। शिकार के हुल्लड़ में महाराणा के सरदार पूर्णमल ने दो बार रावजी पर वार किया, पर वह दैवी शक्ति से बच गये। उसके बाद स्वयं राणाजी ने तलवार से उन पर वार किया जिससे कि उनका सर का आधा हिस्सा कट गया किन्तु उन्होंने परवाह नहीं की। वह स्वयं ही पट्टी करने लगे, इतने में राणा ने उन्हें जिंदा पाकर फिर से वार करना चाहा कि रावजी ने अपूर्व वीरता से उसकी कमर पर बंधा अंगरखा पकड़कर घोड़े से नीचे गिरा दिया और अपनी कटार से उनका काम तमाम कर दिया। तब से सिसोदिया और हाड़ा वंश में शत्रुता पैदा हुई और तब से हर साल के फाल्गुन माह में किसी न किसी प्रकार विधि के विधान से सिसोदिया और हाड़ा वंश के वीरों की कटारें आपस में टकरा कर एक दूसरे का खून पीती हैं। सो यदि राजकुमार शिकार को जाना ही चाहते हैं तो कुछ घुड़- सवार भी साथ कर दें।'

'राव देवा के वंशज इतने कमजोर और कायर नहीं हैं कि अपना बदला भी न ले सकें।' रावजी दहाड़े।

और राजकुमार चला गया, उसे आज्ञा मिल चुकी थी। दूसरे दिन उसने संदेश भिजवा दिया कि मैं दुगारी में ही मिलूंगा। दूसरे दिन वह रवाना हो गया जब दुगारी पहुंचा तो छत्रसिंह वहां पहले ही इन्तजार कर रहा था। इसी दुगारी सामंती से लगता बड़गांव है। यह बहुत ही सुन्दर गाँव है और वैसे तो दुगारी के ही आधीन आता है पर यहां का मीणा सरदार अपनी अलग सामंती करता है। यहाँ महाराव राजा उम्मेदसिंह के पुत्र सरदारसिंह ने एक अच्छा सा महल बनवा रखा है जो कि कभी-कभी बूंदी नरेश के ठहरने के काम आता है। अधिकतर यह खाली ही रहता है। सो गोपीनाथ छत्रसिंह को लेकर यहीं आया और उसी महल में रुका। दूसरा दिन शिकार के लिये निश्चित हुआ। खाना खाकर दोनों मित्र बैठ गये। गोपीनाथ ने नौकर से अफीम लाने के लिये कहा, फिर दोनों मित्रों ने अफीम खाई और फिर दासी पंखा करती रही और वह सो गये। आधी रात के करीब उनकी नींद चीख-पुकार सुनकर खुली। दोनों ने दरवाजे पर खड़े पहरेदार से पूछा—

'यह कैसा शोर है ?' पहरेदार चला गया। थोड़ी देर में वह वापस आया।

'अन्नदाता ! लुटेरे दरियाव ने गाँव पर आक्रमण कर दिया है और वह गाँव लूट रहा है, सो शोर हो रहा है।'

'छत्रसिंह ! चलो, हमें उनकी मदद करनी चाहिये। दरियाव को यदि मैंने पकड़ लिया तो पिताजी प्रसन्न हो जायेंगे।'

'चलो।'

दोनों तैयार होकर घोड़े पर बैठ तेजी से गांव के मध्य की ओर बढ़े जहाँ कि जान्हवी की लपलपाती जीभ आकाश के चुम्बन के लिए बेताब हो रही थी। वहां पहुंचते ही दोनों ने तलवारें म्यान से खींच- डाकुओं पर जोरदार आक्रमण कर दिया। एक भव्य इमारत के अन्दर से चीखों की आवाज आ रही थी। गोपीनाथ ने उस तरफ देखा। फिर उसकी तलवार रास्ता साफ करती हुई उसी ओर बढ़ी। पीछे-पीछे छत्रसिंह भी पहुंचा। एक कमरे के आगे आकर गोपीनाथ रुका। यहीं से चीखों की आवाज आ रही थी। दरवाजे पर दो लुटेरे नंगी तलवारें लेकर खड़े थे। गोपीनाथ को देखते ही वह उधर ही लपके...खन्...खन्... खन् तलवारों की आवाज हुई। गोपीनाथ की तलवार हवा में घूमती हुई एक लुटेरे की गर्दन काट कर रुक गई। दूसरे लुटेरे की तलवार का प्रहार ढाल पर रोक कर उसने थोड़ा पीछे हट कर कटार निकाली और फुर्ती से फल की ओर से पकड़कर उसकी छाती का निशाना ताक कर मारा, कटार पूरी उस दस्यु की छाती में घुस गई। वह गिर पड़ा। गोपीनाथ आगे लपका और दरवाजे पर धक्का दिया। वह पहले ही धक्के में खुल गया। अन्दर का दृश्य देखते ही उसको रोमांच हो आया। एक लड़की उसके कब्जे में थी, एक भयंकर दानव-सा पुरुष उसको बांध रहा था। इससे पहले कि वह उसे मार पाता दरवाजे को खुलता देखकर और फिर गोपीनाथ को अन्दर प्रवेश करता देखकर खड़ा हो गया और पास ही पड़ी नंगी तलवार लेकर गोपीनाथ की ओर लपका।

'कौन है तू ?' वह दहाड़ा।

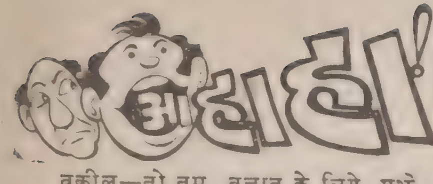
'तेरी मौत !'

'जानता नहीं, मैं कौन हूं ?' मैं स्वयं मौत हूं। दरियाव खां मेरा नाम है, तू अभी बच्चा है, जा चला जा।'

'मैं तुझे मार कर ही जाऊंगा, मेरा नाम गोपीनाथ है।'

'ओह ! राव का बेटा, तेरे बाप का पुराना कर्ज चुकाना है। सूद तुझे ही दिये देता हूं। ले, सम्भाल !'

उसने भीषण प्रहार किया, किन्तु गोपीनाथ ने चतुरता से ढाल पर रोक लिया। जब तक दूसरा वार हो कि गोपीनाथ की तलवार ने उसका हाथ चीरकर रख दिया। उसने हुंकार भरी और पैंतरा बदल कर पूरी शक्ति से गोपीनाथ की तलवार पर अपनी तलवार मारी, खन्...जोर की आवाज हुई और गोपीनाथ की तलवार के दो टुकड़े हो गये, वह हंसा।



वकील—तो तुम बचाव के लिये मुझे वकील करना चाहते हो ? मेरी फीस देने के लिए तुम्हारे पास रुपया भी है ?

जी नहीं ।

मुवक्किल—जी नहीं, मेरे पास रुपया तो नहीं है, लेकिन एक सन् बावन मॉडल की स्टूडीबेकर है ।

वकील—खैर, उस पर तुम्हें रुपया मिल सकता है । अच्छा यह बताओ कि तुम पर किस चीज की चोरी का आरोप है ।

मुवक्किल—सन् बावन मॉडल की स्टूडीबेकर चुराने का ।

अपटूडेट अमरीकी जज ने अपने चश्मे में से फटे लत्ते पहने भिखमंगे को घूरा जो आवारापन के आरोप में उसके सामने लाया गया था ।

उसने घृणा से पूछा, 'क्या तुमने अपने जीवन में कभी एक डॉलर कमाया है ?'

'जी हाँ, योर ऑनर', जवाब मिला, 'जब मैंने पिछले चुनाव में आपको वोट दी थी ।'

(अमेरिका में जज चुने जाते हैं ।)

मजिस्ट्रेट—इस पुरुष की घड़ी इसकी जेब में सेफ्टी-पिन से सुरक्षित की गई थी । फिर भी तुम इसे उड़ाने में कैसे सफल हुए ?'

बन्दी—जज साहब, मैं छः सबक के १० रुपये लेता हूं और यह कला सिखा देता हूं ।

जेबकतरा अपने साथी से मिलने जेल गया । 'भोलू, घबरा मत । मैंने तेरे लिए वकील कर दिया है । फीस में उसे अपनी घड़ी दे दी है ।'

भोलू—'क्या उसने घड़ी लेकर रख ली ?'

साथी...'वह तो यही सोचता है ।'

हिमालय की चोटी पर चढ़ने वाले दो दलों में से एक दल के सदस्य ने अपने अनुभव सुनाते हुए कहा, 'जब हम २८ हजार फुट की ऊंचाई पर पहुंचे, उस समय इतनी ठंड थी कि जलती हुई मोमबत्ती की लौ जम गई, और हम उसे कोशिश करने पर भी बुझा न सके ।'

एक हृदय रोग से पीड़ित व्यक्ति ने डाक्टर को फोन करके मिलने का समय मांगा ।

डाक्टर के सेक्रेटरी ने उत्तर दिया कि तीन सप्ताह के बाद का समय दिया जा सकता है ।

'पर मैं अगर तीन सप्ताह से पहले ही मर गया तो ?' रोगी ने कहा ।

'कोई बात नहीं,' सेक्रेटरी ने उत्तर दिया, 'आप अपनी मुलाकात जब चाहें रद्द करवा सकते हैं ।'

अर्थ-अनर्थ

लीजिये ! पाठकों के मनोरंजन के लिये प्रस्तुत हैं कुछ विचित्र वाक्य !

अशोक कुमार—अजीतनगर (दिल्ली)

पिता बेटे से :—इस बार बन्दूक से निशाना जरा ध्यान से लगाना, अभी गोली मेरे लगते-लगते बची है ।

बेटा पिता से :—चिन्ता मत करो पिताजी, इस बार तुम्हें ध्यान में रख कर ही गोली चलाऊंगा ।

लगता है बेटे का निशाना कच्चा है वरना दूसरी गोली की नौबत नहीं आती ।

कु० निशा सक्सेना, मुरादाबाद

मरीज डाक्टर से :—आपकी दवा से सिर दर्द तो टूट गया लेकिन कमर अभी बाकी है ।

डाक्टर मरीज से :—चिन्ता मत करो वह भी बाकी नहीं रहेगी ।

यह डाक्टर भी शायद डा० झटका का चेला है तभी कमर तोड़ने के लिए मरीज को लिटा रहा है ।

रवि कुमार मनचन्दा—आर. के. पुरम (नई दिल्ली)

गांव में बाढ़ आने से,पहले पच्चीस मकान डूब गये ।

यह उल्टी गंगा कैसे बह रही है ? क्या बिना बाढ़ आये ही मकान डूब गये ?

पूनम मारवाह—दिल्ली

एक मकान पर बोर्ड लगा हुआ था, 'सावधान ! इस घर में कुत्ते रहते हैं ।'

इसका मतलब आदमी गलियों में भौंकते फिर रहे होंगे ।

रोबिनसन मार्टिन—नई दिल्ली—३

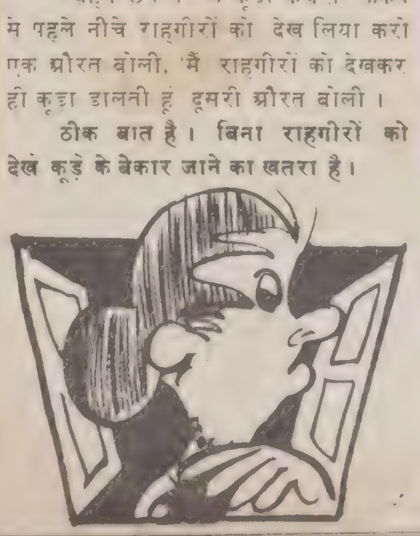
मैंने धोती पहने हुए हाथी देखा ।

क्या हाथी ने कमीज नहीं पहन रखी थी ?

चन्द्रकांत खंडेलवाल—मंगलवारा (अकोला)

"बहन छत पर से कूड़ा कचरा फेंकने से पहले नीचे राहगीरों को देख लिया करो" एक औरत बोली, 'मैं राहगीरों को देखकर ही कूड़ा डालती हूं' दूसरी औरत बोली ।

ठीक बात है । बिना राहगीरों को देखे कूड़े के बेकार जाने का खतरा है ।



सुधीर कुमार—नई दिल्ली

"डाक्टर साहब ! मैं मरना चाहता हूं, मेरी मदद करो ।" मरीज ने दर्द से कराहते हुए कहा ।

'चिंता मत करो अब मैं आ गया हूं तुम्हारी मदद के लिये' डाक्टर ने जवाब दिया ।

लगता है डाक्टर साहब को मरीज मारने का अच्छा तजुर्बा है ।

पाठकों से अनुरोध है कि वे भी इसी प्रकार के दीवाने वाक्य बना कर दीवाना में भेजें। स्वीकृत वाक्य को प्रेषक के नाम के साथ दीवाना में प्रकाशित किया जायेगा ! पते के स्थान पर नीचे दिया गया कूपन काट कर चिपका दीजिये ! बिना कूपन वाले पत्र पर ध्यान नहीं दिया जायेगा !

अर्थ-अनर्थ

दीवाना तेज साप्ताहिक

८-ब, बहादुरशाह जफर मार्ग

नई दिल्ली-२

'दरियावखां की मौत बन कर आया ग पर अब दरियावखां स्वयं तेरी मौत बन कर खड़ा है।'

वह दरियावखां को ताकता रहा।

'दरियाव निहत्थे पर वार नहीं करता।' उसने भी अपनी तलवार फेंक दी। फिर क्षण भर गोपीनाथ को ताका, फिर उसकी ओर झपटकर उसको भुजाओं में जकड़ लिया। गोपीनाथ को यूं लगा, कि मानो अजगर की लपेट हो। अपनी पकड़ से वह गोपीनाथ की पसलियाँ तोड़ता कि छत्रसिंह अन्दर आया। उसने दरियाव को ललकारा अब तो उसने भागना ही उचित समझा। जब वह चला गया तो छत्रसिंह ने कहा—

'बड़ा दुःख है कि बचकर चला गया।'

'कोई बात नहीं कभी तो हाथ आयेगा।'

फिर दोनों की नजरें उस लड़की की ओर उठीं जो कि दरियाव का शिकार थी। वह अस्त-व्यस्त सी खड़ी कोने में कांप रही थी।

'क्या नाम है तुम्हारा ?' गोपीनाथ ने पूछा।

'मृगा।' नजरें नीची किये उसने कहा।

'बहुत सुन्दर हो।' छत्रसिंह ने कहा।

'सुन्दर ही नहीं अपूर्व सुन्दरी ··· सर्वांग सुन्दरी हो।' गोपीनाथ बोला।

'चांद पर भी दाग़ है फिर भी कवियों ने उसकी सुन्दरता पर न जाने कितनी कवितायें बनाई हैं किन्तु तुम्हारे मुख पर तो कहीं भी कोई दाग़ नहीं है।'

'तुम्हारे पिता का नाम क्या है ?'

'शेरसिंह।'

'वह कहां है ?'

'वह आज बूंदी गये हैं।'

'और तुम्हारा कोई नहीं है ?'

'एक भाई है, वह भी पिताजी के साथ ही गया है।'

'अच्छा! हम आज यहीं रहेंगे, तुम्हें कोई एतराज तो नहीं।'

'नहीं।'

'तो ठीक है। तुम जाओ।' गोपीनाथ बोला।

वह चली गई।

'चले क्यों जाने दिया ? ऐसा रूप सत्य कहता हूं, पूरे मेवाड़ में नहीं है।'

'वह मेरी है।' गोपीनाथ बोला।

'नहीं वह मेरी है।' छत्रसिंह दहाड़ा।

'मैंने उसे बचाया है।'

'किन्तु मैंने तुम्हारी रक्षा की अन्यथा तुम मर जाते।'

'किन्तु अब मैं जिन्दा हूं। सो इसका फैसला तलवार से होगा।'

'मुझे स्वीकार है।'

'अरे तू क्य स्वीकार करेगा। तेरे वंशज ने राव सूरजमल पर धोखे से प्रहार करके सारे सिसोदिया वंश की नाक कटा दी थी।'

'गोपी! खबरदार आगे एक भी शब्द बोला तो।' साथ ही उसने तलवार की मूठ पर हाथ रखा।

'अरे! मूठ पर क्या हाथ रखता है। मर्द है तो तलवार बाहर निकाल ले।'

'ले, अपनी इच्छा पूरी कर ले।' साथ ही उसने प्रहार किया। गोपीनाथ की तलवार टूट चुकी थी। उसने उसका प्रहार ढाल पर रोका और इधर-उधर नजर डाली। सामने ही दीवार पर भाले, तलवारें टंगी हुई थीं। उसने बड़ी ही फुर्ती से तलवार निकाली, और फिर लडाई होने लगी। काफी संघर्ष के बाद छत्रसिंह ने गोपीनाथ की तलवार गिराने में सफलता प्राप्त की दूसरे ही क्षण उसकी तलवार ऊपर लहराई, नजदीक ही था कि उसकी तलवार गोपीनाथ का सर अलग करे कि गोपीनाथ ने कहा—

'ठहरो! एक औरत के लिये लड़ना उचित नहीं है।'

'तो फिर सुलह कैसे हो सकती है ?' उसने तलवार नीचे झुकाते हुये कहा।

'उसी से पूछ लिया जाय।'

'चलो।' फिर दोनों ने कांपती हुई दासियों से पूछा।

'मृगा कहाँ है ?'

'अपने कक्ष में है।'

'चलो हमें बताओ।' फिर दोनों उन दासियों के पीछे-पीछे एक कमरे में आये। वहाँ वही लड़की पलंग पर पड़ी सिसक रही थी।

'मृगा!' उसने अपना सर उठाया।

'हमारा एक फैसला करो।'

किन्तु वह चुप रही।

'तुम हममें से किसी को चाहती हो ?'

किन्तु वह चुप रही। छत्रसिंह कड़का, 'बोलो।' वह सहम गई। 'मुझे सुबह तक सोचने का अवसर दो।'

'ठीक है।' दोनों चले गये, फिर धीरे-धीरे नींद की गोद में दोनों ने आश्रय लिया। छत्रसिंह कुछ देर बाद उठा और चुपचाप मृगा के कक्ष की ओर बढ़ा। वहां पहुंच कर उसने सोई मृगा का मुंह का कपड़े से बांध कर कंधे पर लादा और बाहर निकल गया। घोड़े पर सवार होकर रातों-रात वह अपने राज्य की सीमा में घुस आया। सुबह जब गोपीनाथ उठा तो चिड़िया हाथ से निकल चुकी थी। वह उदास मन वापस लौटा। दो-तीन दिन व्यग्रता से व्यतीत हुये, रह-रह कर मृगा की तस्वीर उसकी आंखों में कौंध उठती। चौथे दिन एक आदमी ने आकर गोपीनाथ को एक पत्र लाकर दिया।

मेरे नाथ,

यद्यपि मैं आपके लायक नहीं किन्तु फिर भी मैं उसी क्षण से आपकी होगई जब कि आप मेरी रक्षार्थ आये। इस समय मैं फिर संकट में हूं। मैं इस समय बूंदी राज्य के सरहद के पास बीजोल्यां नामक गांव में हूं। मैं आपको निमंत्रण देती हूं। आप आकर मेरा अपहरण कीजिये। मैं तन-मन से आपकी हूं। इन्तजार में रहूंगी।

आपकी ··· मृगा

गोपीनाथ कुछ देर सोचता रहा। 'एक रूपवती निमंत्रण दे रही है, स्वयं अपने अपहरण का ··· मेरी जिन्दगी उसका रूप, लावण्य, माधुर्य साकार कर देगा ··· ऐसा तप्त रूप ··· मैं जाऊँगा, अवश्य जाऊंगा। वह बड़बड़ाया।

दूसरी रात को वह बीस घुड़सवार सैनिकों को लेकर बीजोल्यां गया। वहां करीब आधी रात को वह पहुंचा। पूछते-पूछते वह वहां पहुंच गया, जहां कि छत्रसिंह रुका हुआ था। हवेली के बाहर सैनिक खड़े थे। इसके दस सैनिक उन पर टूट पड़े, और गोपीनाथ बाकी दस सैनिकों को लेकर अंदर बढ़ गया। जिस कमरे में छत्रसिंह मृगा के साथ रुका हुआ था। उस कमरे का दरवाजा बन्द था। गोपीनाथ ने लात और घूंसे बरसाने शुरू कर दिये। अन्दर सोये छत्रसिंह को ऐसा लगा मानो भूकम्प आ गया हो। वह उठा, और अन्दर से गरजती हई आवाज आई।

'कौन, बदतमीज है ?'

'तेरी मौत!'

दरवाजा खुला। अलसाया सा छत्रसिंह उठा और दरवाजा खोल दिया। उसे शायद, गोपी को पाने की आशा वहां नहीं थी। सो उसे पाकर वह विस्मित रह गया। वह तलवार लेने लपका। इतने में एक सैनिक की तलवार उसे पीठ पर चुभती हुई महसूस हुई।

'चुपचाप खड़े रहो, मृगा कहां है ?' गोपी ने पूछा।

'मुझे मालूम नहीं।'

'कायर! यदि मृगा को इतना ही चाहता था, तो मर्दों को तरह तलवार के सायों में उसे ले जाता, तूने राजपूती आन और सिसोदिया वंश की नाक कटा दी।'

'गोपी !! लगाम दो।'

'बताता है, या तेरी गर्दन धड़ से अलग कर दूं।'

'मुझे मालूम नहीं।'

'इसे रस्सी से जकड़ कर बांध दो' उसने सैनिक से कहा। सैनिक ने तत्काल आज्ञा पालन किया। फिर गोपी ने उसी सैनिक से कहा—

'तुम तैयार हो जाओ, तीन हो जाने पर इसकी गर्दन अलग कर देना।'

और सैनिक तैयार हो गया, गोपी गिनती गिनने लगा...'एक...दो...ती...।'

'बताता हूं।'

'बताओ।'

'इस मकान के तहखाने में है।'

'चलो रास्ता दिखाओ।'

फिर सैनिक छत्रसिंह को उसी ओर ले जाने लगे, जिधर वह चल रहा था। एक दरवाजे से नीचे उतरे...वहीं मृगा बंधी पड़ी थी। आगे बढ़ कर गोपी ने उसे खोला। वह खड़ी हुई कृतज्ञ नेत्रों से गोपी की ओर देखने लगी।

'मृगा—इसकी सजा तुम्हीं सोचो।'

'कुमार—इसकी सजा यही है कि इसको आप यहीं, सलामत छोड़ जाइये।'

'यह कैसी सजा है ?'

'सबसे बड़ी !! यह मुझे हरण करके लाया और आप मुझे इसके सामने ले जा रहे हैं...एक मर्द के लिए यह डूब मरने की बात है। सिंह के मुंह से निवाला कोई नहीं छीन सकता, पर गीदड़ के आगे से कोई भी ले जा सकता है।'

'बहुत खूब, क्या कहा।'

फिर उसने छत्रसिंह से कहा। 'यदि जरा भी शर्म हो तो डूब मरना।'

और फिर वह मृगा को लेकर आगया। इस बात का जब राणा को मालूम हुआ तो उसने छत्रसिंह को बुलाया। छत्रसिंह डरता-डरता राणा के कक्ष में पहुंचा, राणाजी क्रोध में दहाड़े—

'छत्रसिंह ! हमने जो सुना है, क्या वह ठीक है ?'

'जी, ठीक है।'

'तुमने हमारी नाक कटा दी, राजपूतों की आनपर कलंक लगा दिया, तुम मर जाते पर उस लड़की को क्यों ले जाने दिया ?'

'मैं अकेला था।'

'सिंह अकेला ही पूरे जंगल पर शासन करता है।'

'मैं अपनी भूल सुधारने की आज्ञा चाहता हूं।'

'जाओ ! जब सफल होकर आओ तभी मुझे अपना मुंह दिखाना।'

छत्रसिंह बाहर निकल गया, फिर वह एक सफल षड़यंत्र की रचना करने हेतु अपने अभिन्न मित्र नागराज के पास चला गया। उधर गोपी मृगा को लाकर सकुशल उसके घर छोड़ने आया। मृगा का बाप तब तक आ चुका था। वह सोच रहा था कि दरियाव खां उसकी लड़की को ले गया, किन्तु जब उसने मृगा को गोपी के साथ देखा, तो वह आश्चर्यचकित रह गया।

'रावजी !' और वह झुक गया।

'पिताजी, छत्रसिंह मुझे ले गया था, किन्तु यह मुझे छुड़ा कर ले आये हैं।'

'छत्रसिंह !!'

'जी हां, राणा का बेटा।'

'ओह ! आइये, अन्दर आइये।'

फिर वह अन्दर आकर बैठ गया, मृगा अन्दर चली गई। कुछ समय उपरान्त वह आई। घाघरा और लाल रंग की कांचली तथा उसी रंग की ओढ़नी, जिससे कि उसका मस्तक और शरीर ढके हुए थे। लाल रंग की ओढ़नी ने उसकी सुन्दरता पर चार-चाँद लगा दिये थे। गुलाबी रंग का मुख कमल और लाल रंग की ओढ़नी से ढकी वह अधखिली कली समान लग रही थी। वह पास आई विभूति और सौन्दर्य-समूह की प्रतिमा



मालूम पड़ रही थी। अण्डाकार मुह, मीनाकृति सजल और बड़ी-बड़ी थीं। हाथ में पकड़ी चाँदी की तश्तरी उसने गोपी और पिता के सामने रखदी।

अगले ही दिन वह बड़गांव जा पहुंचा, अपने महल में ठहरा। मीणा सरदार शेरसिंह उसकी आवभगत के लिये पहुंच गया। उसने शेरसिंह से कहा—

'आप बीस घुड़सवारों को ले जाकर दरियाव खाँ का पता लगाइये वह दुगारी के जंगल में पड़ाव डाले बैठा होगा। यदि आप अपने कार्य में सफल हो गये तो राव साहब की तरफ से पूरे दुगारी की सामन्ती आपको दे दी जायगी।' शेरसिंह मन ही मन राव से जलता था पर दुगारी की सामन्ती का लालच उसे दुगारी के जंगलों में ले ही गया, जाते समय वह मृगा से कह गया—

'बेटी मेरा पता नहीं कितने दिन में आऊँ, तू संभल कर रहना।'

'पिता जी आप चिन्ता न करें।'

और फिर शेरसिंह चला गया। उधर शेरसिंह को भेज गोपी निश्चिन्त होकर मृगा से प्रेम-क्रीड़ा करने लगा। वह जानता था कि मीणा सरदार कभी भी मृगा को उसे नहीं देगा। और उसके अद्वितीय रूप का पान वह करना चाहता था। उस दिन रात को मृगा उसी के महल में उसके साथ थी। चमकते परिधान में वह इन्द्रधनुष-सी लग रही थी। गोपी ने शमादान की रोशनी में उस रूपसी का अलौकिक रूप निहारा और ठण्डी साँस भरी।

'मेहरबान यह ठण्डी आहें क्यों ?'

'तुम्हें पाने के लिए।'

'आपकी इच्छा पर तो पर्वत झुक सकता है !'

'पर्वत तो बेजान होता है पर तुम...।'

'मैं तो उसी क्षण आपकी हो चुकी थी जिस समय आपने मुझे बचाया। और फिर जब छत्रसिंह के पंजे से आपने मुझे मुक्ति दिलाई, तब से हर समय आप मेरे सपनों में आते रहते हैं।'

'सच।'

फिर एक दिन उसके पिता का दूत आया और उसने रावरतन का संदेश गोपीनाथ को दिया, उसने पढ़ा—

गोपी,

तुम मृगा में लीन हो। और उधर राणा की सेनायें सीमाओं के अतिक्रमण की चेष्टा कर रही हैं। छत्रसिंह एक सैनिक टुकड़ी के साथ दुगारी की ओर बढ़ रहा है। तुम यथा-

(शेष पृष्ठ ३३ पर)


फैणटम
और गुफा का दैत्य
नगाड़े बजाकर सारे जंगल में यह समाचार फैला दिया गया कि दैत्य फैण्टम के कब्जे में है।
दैत्य फैण्टम के कब्जे में है
दैत्य फैण्टम के कब्जे में है
हिस्स्स खुम्भी चॉप
नमस्ते
!!!
दैत्य फैण्टम के कब्जे में है
गुफा के दैत्य के बन्द होने की खबर सारे जंगल में फैल जाती है।
चॉप
हु हु
नमस्ते
यह मेरा दोस्त है।
हु हु
झरने को देखकर दैत्य गुप्त द्वार पर रुक जाता है... अजीब बात है यह पानी से डरता है।
डरो नहीं मेरे साथ आओ... तुम्हें खुम्भियां दूगा।
हिस्स
भूख दैत्य के डर को भगा देती है।
आओ आओ खुम्भियां।
हिस्स्स।
चाचा वाकर दैत्य के साथ आ रहा है।
!
वाह।
क्या यही है वह ?
उफ...
!!
हैल्लो
चॉप
क्या यह हमारी बात समझता है ?
यह बोलता नहीं, सिर्फ दो-तीन शब्द सीखे हैं। तुम डरो मत। यह भोला दैत्य केवल खुम्भियां खाता है।
यह सुन्दर नहीं है...
इसका नाम क्या है ?
इसका कोई नाम नहीं।
हिस्स
यह लो... मैं तुम्हें हिस्स्स कह कर बुलाऊंगा।


देखो चाचा वाकर मैंने हिस्स को गेंद खेलना सिखा दिया ।
हिस्स
बहुत अच्छा रैक्स ।
चलते फिरते भूत के लिये
पकड़ो
हिस्स
हिस्स्स के साथ मैं क्या करूं ? इसका दिमाग तो बच्चे जैसा है मगर ताकत हाथी जैसी है ।
गुफा का दैत्य घने जंगल में ।
कमाल की बात है इस दैत्य को रैक्स के साथ खेलने में कितना आनन्द आ रहा है ।
चल मेरे घोड़े चल
हाँ ।
तुम बहुत खुश नजर आ रहे हो क्यों ?
मिस तगामा मैंने अभी-अभी अपनी एक समस्या हल कर ली है । जिससे मैं बहुत परेशान था ।
मैंने सोच लिया है मैं हिस्स्स के साथ क्या करूंगा ?.........
क्रमश

नया धारावाहिक उपन्यास भाग ४

लखपति भिखारी

-उषा रानी

अब तक की कहानी

एक दिन रात को बन्टी के घर में चोरी हो जाती है। पुलिस को सूचित किया गया। छान, बीन के बाद अन्दाजा लगाया गया कि चोर दो थे। रानी नाम की एक औरत जो उनके घर कपड़े धोने आती थी, अचानक लापता हो गई, अब सब को विश्वास यही था कि चोरी उसने की है। पर किस के साथ मिलकर? अब आगे पढ़िये--

'माल कहां गया सब ?'

'बिक गया !'

'किस को बेचा ? कहां बेचा !'

'हमने एक आदमी को बेच दिया था वह सारा सामान खरीद लिया करता है।'

'डाक्टर गुप्ता का भी माल उसको बेचा ?'

'हाँ।'

'कौन है वह आदमी। उसका पूरा पता ठिकाना बोलो !' पुलिस ने पूछा। रत्तीलाल ने सब बतला दिया।

पुलिस उस जगह गयी, जहाँ माल बेचा गया था, . पर वहां ताला लगा था पूछ-ताछ करने पर पता लगा कि उस दुकान का नया मालिक भी जगह छोड़ गया है।

'नया मालिक !'

'हाँ ! पड़ोसी ने बतलाया।

'क्या इस जगह के मालिक बदलते रहते हैं।'

'हाँ ! हर दूसरे-तीसरे महीने एक नया किरायेदार आता रहता है।'

'क्यों ?'

'दुकान चलती नहीं।'

'इसका मालिक कौन है ?'

'एक बुढ़िया है। पिछले हिस्से में रहती है। इस तरफ दुकान है, उस तरफ रहती है। बुढ़िया अकेली है। उसका कोई नहीं है।'

पुलिस बुढ़िया के पास गयी।

बुढ़िया उस समय सो रही थी। बड़बड़ाती हुई उठ गयी।

'क्या बात है ?'

पुलिस देखकर वह सकपका गयी। 'दुकान वाला कहां गया ?'

'दुकान छोड़ गया।'

बुढ़िया ने बतलाया, पर वह कौन था, कहाँ का था, बुढ़िया बतला न सकी। उसने केवल हुलिया बतलाया पर वह ऐसा था कि उससे बात नहीं बन रही थी। बुढ़िया की बातों से पता चला था कि उसकी दुकान मनहूस है। लगातार दो-तीन साल से यही चल रहा है। दुकानदार आता है, पर दो-चार महीनेसे ज्यादा टिक नहीं पाता है। इसके बाद छोड़कर चला जाता है। अब तक आठ-नौ बार ऐसा हो चुका है। लोग लेते हैं, छोड़कर चले जाते हैं। फिर कोई नया आ जाता है।

'और किराया ?'

'मिल जाता है।' बुढ़िया ने बताया।

'बढ़ाकर।'

'अजी एक बराबर भी मिले तो गनीमत है। कभी-कभी घटाकर भी देना पड़ा है।'

बुढ़िया की बातों से पुलिस वालों को विश्वास हो गया कि वह सच बोल रही है। पास पड़ोस के लोगों ने भी उस की बात की पुष्टि कर दी थी। दुकान सचमुच 'मनहूस' मान ली गयी थी। इसके बाद भी आठ दस दिन तक खाली पड़े रहने के बाद कोई न कोई आ ही जाता था और दुकान ले लेता फिर चलता बनता।

इस जगह आकर पुलिस को निराशा हाथ लगी।

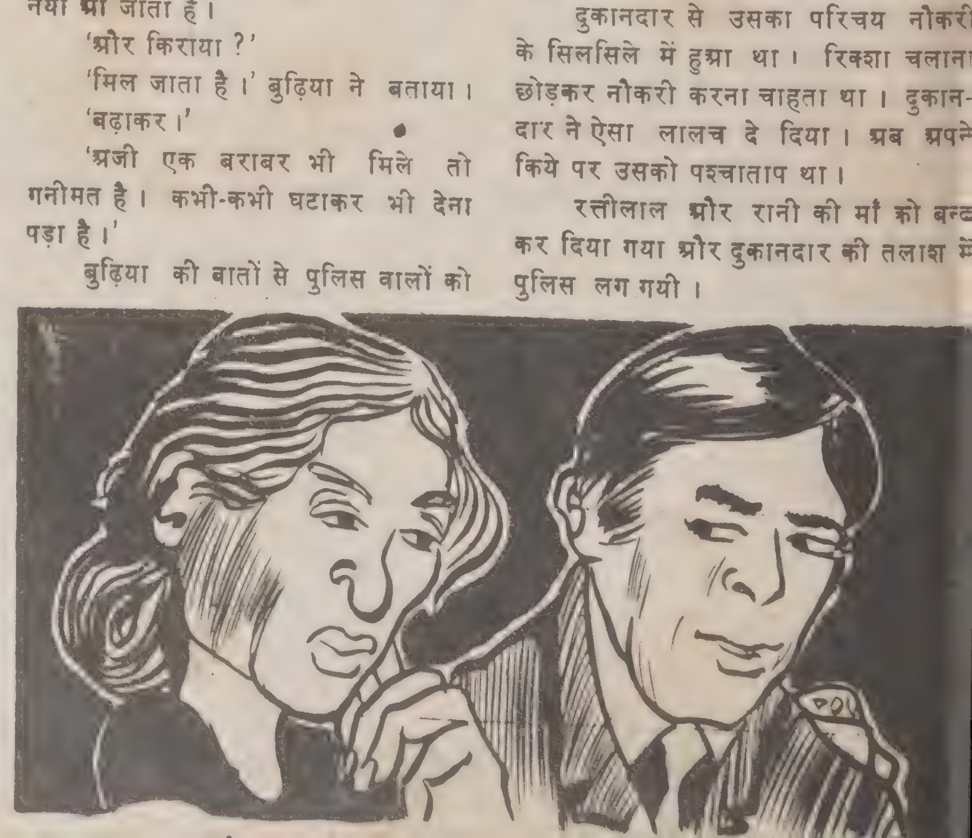
रत्तीलाल भी कुछ बतला सकने में मजबूर था। उसने ठीक ही हुलिया बतलाया था। उसका बतलाया हुलिया बुढ़िया से मिलता था वह भी उसका और पता-ठिकाना न बतला सका।

रत्तीलाल और रानी की माँ की दोस्ती रत्तीलाल रिक्शा चलाया करता था दुकानदार ने ही उसको लालच दिया। डा० गुप्ता और आशु, निशा, बंटी के पिता के घर चोरी करने की योजना बतलाई सारे तरीके बतलाये। दोनों ही चोरियों का माल खरीद लिया। इसके बदले में रत्तीलाल को अच्छा पैसा मिला। वह रानी की मां के साथ बाहर निकलने की योजना बना ही रहा था कि पकड़ा गया, सारा खेल बिगड़ गया।

इसके अलावा उसने और चोरियाँ न की थीं। केवल दो ही जगह हाथ साफ किया था वह भी दुकानदार के लालच में आकर वरना ऐसा करने का इराद बिलकुल न था।

दुकानदार से उसका परिचय नौकरी के सिलसिले में हुआ था। रिक्शा चलाना छोड़कर नौकरी करना चाहता था। दुकान-दार ने ऐसा लालच दे दिया। अब अपने किये पर उसको पश्चाताप था।

रत्तीलाल और रानी की माँ को बन्द कर दिया गया और दुकानदार की तलाश में पुलिस लग गयी।



मोटू पतलू



पिछले सप्ताह राजकुमारी मधुमति ने अपनी हेमा बिल्ली की रक्षा के लिये श्री डिटेक्टिव मोटू, पतलू और चेलाराम की सेवाएं प्राप्त की थीं और घसीटा राम जी जबरदस्ती उनके चपरासी बन गये थे। राजकुमारी के पिता महाराजा भोपेन्द्र सिंह मरते समय वसीयत कर गये थे कि उनकी करोड़ों रुपये की जागीर राजकुमारी को तभी मिलेगी जब वह उनकी प्यारी बिल्ली हेमा को दो साल बाद कोर्ट में पेश करेगी और उसकी देख-रेख भली भांति की जाएगी। वरना उनकी जागीर उसके नाम हो जाएगी जिसके पास यह बिल्ली होगी। इस वसीयत के बाद कई बार बिल्ली को चुराने के प्रयत्न होते रहे हैं। बिल्ली को चोरों से बचाने और चोरों का पता लगाने के लिये राजकुमारी ने श्री डिटेक्टिव की सेवायें प्राप्त की हैं। इसके बाद का आंखों देखा और कानों सुना हाल आपके सामने प्रस्तुत है।






मोटू-पतलू तो बेकार अपनी टांग फंसा रहे हैं राजकुमारी जी, जासूसी का बीस साल का तजुर्बा तो मुझे है । तुम्हारे पास जो हीरा है वह मुझे दे देना जासूसी के बदले में ।
तुम्हें दे दूंगी हीरा वह कौनसी बड़ी बात है । पर तुम बिल्ली को चोरों से बचाने की तरकीब तो सोचो ।
यह तो सरासर ना इंसाफी है नानी जी राजकुमारी ने हमें हायर किया है । थ्री डिटैक्टिव हम हैं । हीरा हमें मिलना चाहिये । यह तो हमारा चपरासी है ।
हीरा तुम्हें ही मिलेगा । मैं तुम्हारे साथ
हीरा हमें मिलेगा । नानी जी हमारे साथ हैं ।
हीरा हमें मिलेगा राजकुमारी मेरे साथ
इन सबको बहस करने दो । तुम बताओ, बिल्ली की रक्षा के लिए तुम जो योजना बना रहे थे उसका क्या बना ? दो दिन पहले तुमने मुझसे पाँच हजार रुपये लिये थे । उनसे बिल्ली की रक्षा का कोई काम हुआ है क्या ?
पक्का काम हो गया है जी । दूसरे कमरे में चल कर देख लो ।
यो देखो जी, पांच हजार रुपये में मैं हेमा जैसी दस बिल्लीयाँ और खरीद लाया हूं
Oh my God मुझे जीते जी मार दिया जासूसों के इस पाकेट बुक एडीशन ने। लगता है करोड़ों की जागीर निकल गई हाथ से।



बड़ा फन्नेखां ग्राइडिया मारा है जी मैंने । यो सारी बिल्लियां एक जैसी हैं, जब चोर पहचान ही नहीं सकेगा कि ग्रसली हेमा बिल्ली कौनसी है, तो वह चुराएगा किसे ?
चोर को तो पता नहीं चलेगा कि ग्रसली हेमा बिल्ली कौन सी है । पर मुझे भी कैसे पता चलेगा कि मुझे कौनसी बिल्ली की रक्षा करनी है । मैं भी तो ग्रसली बिल्ली को नहीं पहचानती ग्रौर न बिल्ली मुझे पहचानती है । मैं कुछ दिन पहले ही इंग्लैंड से ग्राई हूं ।
मैं भी ग्रसली बिल्ली नहीं पहचान सकता, पर ग्रसली घसीटा राम को बिल्लियों ने पहचान लिया है । मैं यहां बिल्ली की रक्षा के लिये ग्राया था । इन बिल्लियों से ग्रब मेरी रक्षा कौन करेगा ?
सारा किया धरा चौपट कर दिया इस डिटेक्टिव चूहे ने ।
इसके सर में ईंट दे मारो, जहां से यह ग्राइडिया निकला है ।
रोड़ों की जागीर हाथ से निकल गई ।
हमारी डिटेक्टिव कम्पनी का जनाजा निकल गया ।
ग्ररे मेरा हीरा मारा गया ।
हीरा मारा गया । यह ग्रादमी पागल तो नहीं है ?
मैंने सोलह ग्राने पक्का काम किया है राजकुमारी जी । पहले मैंने ग्रसली बिल्ली की पहचान कर ली थी । तभी से दूसरी बिल्लियों में मिलाया है । ग्राप मेरे साथ ग्रकेली चलिये दूसरे कमरे में ।
ग्रसली बिल्ली की ऐसी पहचान बताऊंगा कि ग्राप मान जाएंगी ।
ग्रापने बताया था ना कि वसीयत में हेमा बिल्ली की एक खासियत लिखी है । जिस बिल्ली में वह खासियत होगी वही ग्रसली बिल्ली मानी जाएगी ।
ठीक कह रहे हो तुम ।


वह खासियत दिखाने के लिए मैं चूहे का यह पिंजरा अपने साथ लाया हूं ।
यह बिल्ली चूहे खाने की बजाए चूहों से प्यार करती है और पहली मुलाकात में ही उन्हें अपना मित्र बना लेती है । संसार की यह पहली अनोखी बिल्ली है ।इसीलिए आपके पिता जी इससे इतना प्यार करते थे और उन्होंने अपनी वसीयत में इसे एक शर्त बना लिया है ।
कमाल कर दिया छोटे से जासूस ने ।
जाशूश कहो जी जाशूश ।
बिल्ली की इस पहचान को अब मैं एक राज रखूंगी । अब मेरी बिल्ली को कोई नहीं चुरा सकता ।
This mini detective is great detective. इसने बिल्ली को चोरों से बचाने का पक्का काम कर दिया ।
थ्री डिटैक्टिव कम्पनी जिन्दाबाद ।
इसने मेरे बीस साल वाले तजुर्बे से ही कोई जुगाड़ लड़ाया होगा । हीरा तो अब भी मुझे ही मिलना चाहिये जी ।
रो रो कर जान दिये दे रहा है बेचारा । हीरा इसी को दे दो ।
नानी जी भी जुबान से मुकर गईं । अभी कह रही थीं ,हीरा तुम्हें मिलेगा । मैं तुम्हारे साथ हूं ।
बुलाओ हीरा को । वह है कहां ?
ऊपर ही होगा ।
हीरो ओ हीरा !
हीरे को आवाज देकर बुलाया जा रहा है । मारे गये पापड़ वाले ।


लो, आ गया हीरा, हमारा सबसे वफादार नौकर है। बस जरा ऊंचा सुनता है। आँखों से अंधा है। एक टांग टूटी हुई है इसलिए उंगली पकड़ कर चलाना पड़ता है।
इस हीरे की बजाए कोई पत्थर दे मारो ना मेरे सर में।
यह तो ऐसा नौकर है जिसकी नौकरी इसके मालिक को करनी पड़ेगी।
अरे तेरा बेड़ा गर्क हो गया। अरे तू सर पर पांव रख कर भाग ले मोतियों वाले घसीटा राम। हीरे के चक्कर में एक बार फिर धोखा खा गया। ऐसा दूध पीने वाला हीरा गले बंध गया तो मुझे हरी घास खानी पड़ जायेगी।
थ्री डिटैक्टिव की इस सफलता की खबर जंगल की आंच की तरह चारों ओर फैल गई। उनके पास ढेरों बधाई संदेश आने लगे। राजकुमारी की करोड़ों रुपये की जागीर सुरक्षित हो गई थी। राजकुमारी और उसकी नानी पहले ही लखपति थीं इसलिए समाचार पत्र थ्री डिटैक्टिव को खास महत्त्व देने लगे थे और पत्रों के फोटोग्राफर और संवाददाता उनसे मिलने आने लगे थे।
हालात कुछ ऐसे लग रह हैं कि यहां से कोई न कोई गर्मागर्म खबर मिलेगी।
जहाँ इतनी मोटी रकम का चक्कर हो वहां तो पता नहीं क्या-क्या गुल खिल जाते हैं।
वह देखो, क्या खुसर-फुसर हो रही है। जरूर दाल में कुछ काला है।
मुझे फोटो खीच लेने दे इनकी।



तुम्हारा काम हो गया नानी जी । हमारी फीस के दस हजार रुपये देकर हमें विदाई दो ।
दस हजार रुपये ! ऐसे तो हमारा दिवाला निकल जाएगा । फैसला तो इस बात पर हुआ था कि तुम हीरा लोगे ।
ऐसे टरकाई में नहीं आएंगे हम नानी जी । जिसे आप हीरा कह रही हैं, ऐसे ईंट-पत्थर तो मैं हजारों दे सकता हूं आपको ।
चलो, दो-चार दिन और बिल्लियों की देख-रेख करो, तुम्हारी जासूसी की फीस का हिसाब भी हो जाएगा ।
क्या प्रेम से बातें हो रही हैं । मुझे तो कुछ और ही घोटाला दिखाई दे रहा है ।
वह दांतों वाला चूहा इन्हीं का साथी है । उसे कुरेद कर अन्दर खाने की बात उगलवाओ ।
मोटू और नानी एक दूसरे को पसन्द करते हैं ।
बहुत पसन्द करते हैं जी ।
बहुत पसन्द करते हैं । हो गया घोटाला ।
इन्हें एक दूसरे पर भरोसा है ?
भरोसा तो करना ही पड़ता है जी । अभी, जब हीरा लेने पर राजकुमारी से बहस हो रही थी, तो नानी ने मोटू से कहा था तुम फिकर न करो । मैं तुम्हारे साथ हूं ।
मैं तुम्हारे साथ हूं ? बात यहां तक बढ़ गई है ??
जीवन भर साथ निभाने की बात हुई है क्या ?
जहाँ सच्चाई और ईमानदारी हो वहां जीवन भर ही साथ निभाया जाता है ।
इन सब बातों के बीच रुपया भी है क्या ?
सोलह आने है जी, रुपया ही तो आजकल सब कुछ है दुनिया में । रुपये के बगैर तो कहीं कोई रिश्ता नहीं जुड़ता । न मेरा न आपका ।
रुपये के बगैर रिश्ता नहीं जुड़ता । और रुपया है तो रिश्ता जुड़ गया ?
बन गई खबर । भाग लो प्रेस की ओर ।
क्या राज़ की बात उगलवाई है मैंने इस चूहे से ।
इतनी बड़ी खिचड़ी पक रही है । दोनों की उम्र में कितना अन्तर ! पर पैसा जो आ गया बीच में ।



अगले रोज मोटू को चारों ओर से बधाई संदेश मिलने लगे थे।
बधाई हो। बधाई हो।
किस बात की बधाई हो ? कौन बोल रहे हो तुम ?
दीवाना के पाठकों की ओर से मोटू को बधाई !
किस बात की बधाई ?
यो फूलों का गुलदस्ता और यो पत्र भी दे गये हैं कुछ लोग। लिखा है, दीवाना के एजेंटों की ओर से मोटू को बधाई हो।
हैं। यह कैसी आवाज आ रही है बाहर से ?
बैंड बज रहा है, पर क्यों बज रहा है ?
दीवाना तेज फ्रैंडस क्लब की ओर से मोटू को नया जीवन आरम्भ करने पर बधाई!
मारे गये तरावड़ी के घाट। अरे यह क्या चक्कर चल रहा है।
चक्कर नहीं घनचक्कर चल रहा है। यह आज का समाचार पत्र देखा है तूने।
मोटू और नानी विवाह बन्धन में।
शीघ्र ही एक दूसरे के जीवन साथी बन रहें है।
रुपये ने उम्र का अन्तर मिटा दिया।
हमारे संवाददाता ने बड़ी छानबीन करके इस अन्दरुनी बात का पता लगाया है कि मोटू और नानी एक दूसरे को बहुत पसन्द करते हैं। चेलाराम ने एक भेंट वार्ता में बताया कि नानी ने एक बात.....


अरे पतलू, यह क्या घोटाला कर दिया इन समाचार पत्र वालों ने। नानी इसे देखेगी तो गुस्से में आकर आत्महत्या कर लेगी।
आत्महत्या नहीं करेगी हम दोनों की खाल में भुस भरवा देगी।
यह समाचार पत्र देखा है आपने ? यह क्या छाप दिया है इन लोगों ने ?
हमारा कोई दोष नहीं है इसमें।
किसका दोष है किसका नहीं है, छोड़ो इन बातों को। जब समाचार पत्र वालों ने लिख ही दिया है तो आओ हम विवाह कर ही लें। देखो मैं तो जय मालायें भी बनवा लाई हूं।
ओ भाई पतलू, मेरे गले में कोई फांसी का फंदा डाल कर मुझे किसी पेड़ से लटका दे।
हम सोच रहे थे नानी नाराज होगी, पर यहां तो हिसाब ही उल्टा है।
अरे ओ खरगोश ! तूने अपने इंटरव्यू में कोई उल्टी-सीधी बात तो नहीं कह दी थी संवाददाता से ? सर पर पांव रख कर भाग लो भाई थ्री डिटेक्टिव।
सच्ची बात कही थी चूहे। पूरी तरह मरवाने वाली।
मैंने यो कहा था बस कि नानी ने मोटू का साथ देने की बात कही थी। और रुपये के बगैर कौनसा रिश्ता जुड़े है आजकल किसी से। कोई झूठ बात कही थी क्या मैंने ?
असल में तो मैं मारा गया इस बार। इन्हें असली हीरा मिल गया है कोई जो यह मुझसे छुपा कर लिये जा रहे हैं।

(पृष्ठ १८ से आगे)

रत्तीलाल वैसे बाहर चला गया था। रानी की माँ को भी अपने साथ ले गया था पर वापस आ गया। शायद उसको इस बात का विश्वास था कि उनको पुलिस अपने घेरे में नहीं ले सकती है। उसका पता नहीं पा सकती है। अपनी जगह पर फिर वापस आ गया।

बंटी को इसकी आशा न थी पर फिर मैदान हाथ आ गया और रत्तीलाल की गिरफ्तारी से कुछ तो रास्ता खुल गया।

'भाई जी ! यह तो कल्याण हो गया।'

कैसा कल्याण !' आशु ने अचरज से पूछा।

'अपना माल तो गया। चोरों का पता लगता जा रहा है, पर माल हाथ आता दिखलायी नहीं पड़ रहा है।'

आशु का चेहरा गंभीर हो गया। बंटी का मुंह देखने लगा। धीरे से बोला, 'माल का पता तो लगकर रहेगा।'

'मुश्किल है !'

'देखते हैं !' आशु बोला, 'एक बात समझ में नहीं आ रही है कि जब यह दुकान इतनी मनहूस है, तो लोग बराबर लेते क्यों हैं ?'

'पता नहीं रहता होगा।'

'पता तो जरूर लग जाता होगा।' आशु ने कहा, शायद इस उम्मीद में कि दुकान उनको लाभ दे जायेगी, ले लेते रहे होंगे।'

बंटी के माथे पर सिकुड़नें पड़ गयीं। वैसे यह बात उस को बड़ी अटपटी लग रही थी।

हर दो तीन माह बाद दुकानदार का बदल जाना आश्चर्यजनक लग रहा था।

दोनों अपने कमरे में खामोश बैठे रह गये। पुलिस की सारी जांच पड़ताल वह चुपचाप देखते सुनते रहे। फिर अपने पिता के साथ वापस आ गये थे। चोर तो पकड़े गये थे, पर माल बरामद न हो सका था। इस कारण मन भारी पड़ गया था। पिता की आठ-दस साल की गहरी कमाई एक ही झटके में निकल गयी थी। पिता कुछ न कुछ कह रहे थे, पर मन ही मन वह दोनों उस बात को तो समझ ही रहे थे।

'निशा नहीं दिखलायी पड़ रही।' बोला बंटी।

'होगी कहीं।'

बंटी उठ कर बाहर आ गया। शायद सोचते-सोचते उसका दिमाग भन्ना गया था, इसलिए वह निशा से बातें करके मन बहलाना

निशा कहीं न दिखलायी पड़ी।

वह गेट से बाहर आ गया।

चुपचाप सड़क का नजारा देखने लगा। यकायक निशा पर उसकी निगाह चली गयी। निशा कुछ दूर पर खड़ी थी और फुटपाथ पर उसके पास चीथड़ा लिपटा कोई बैठा था।

कौन है ? उसका माथा ठनका।

लपक गया। पास जाकर देखा। वह एक भिखारी था। निशा उससे बातें कर रही थी।

निशा को बंटी के आने का पता न लग सका। बंटी एकदम उसके पीछे आकर खड़ा हो गया था।

'उसने तुमको मारा…!'

'बहुत मारा बिटिया।' फुटपाथ पर पड़ा भिखारी कह रहा था।

'बड़ा बदमाश है।'

'हां ! वह इसी तरह मार पीट करता है। आधा पागल सा है।

उससे दूर रहा करो बाबा।'

भिखारी चुप रह गया।

निशा ने पूछा, 'तुमने कुछ खाया ?'

'खाया है बिटिया।'

'इस तरह कब तक भीख मांगोगे बाबा ? क्या मिल जाता है इस में तुम को।'

'एक-दो रुपये मिल जाते हैं। गुजारा हो जाता है।' वह बोला।

निशा का गला भर आया था।

'बेटी को देख लेता, एक बार…बस !'

निशा उसका मुंह ताक रही थी।

'आज तो यहीं पड़ा रहूंगा। कमर में बड़ा दर्द हो रहा है। रामदास ने पटक दिया था…।

'मुझे बतलाना कौन रामदास है ?'

उससे मत बोलना बिटिया। आधा पागल है।'

'देखूंगी।'

बात करते-करते यकायक निशा की निगाहें बंटी पर पड़ीं तो वह सकपका गई। फिर हंसने लगी।

'भाई जी, ये बेचारा बड़ा दुःखी है।'

'मैं सब सुन रहा था…।

'चोर की तरह।'

'तुम्हारे पीछे खड़े होने से क्या कोई चोर बन जाता है।

'चोर ऐसा ही करते हैं।'

'मैं चोर हूं।'

'मैंने तुमको नहीं कहा है, भाई जी !'

बोली निशा। शेष आगामी अंक में

एक नई प्रतियोगिता

क्या आप बता सकते हैं यह क्या है ?



98-76



बाहिर एक आसामी आया है बहुत दूर से आया है हमारे पास ! बम्बई से आया है।
बम्बई से ? अपना क्या नाम बता रिया है ?
नाम रिसी केस मुकर्जी कह रिया है। जब इसका नाम ही रिसी केस है तो हन्दाजा लगा ले कितना बड़ा केस लेकर आया होगा ?
रिसीकेस मुकर्जी ? नाम से ऐसा लगता है कि कहीं सुन रखा है पहले भी !
वह कबाड़ी तो नहीं है जो हमसे हखवार खरीद कर ले जाया करता है।
नहीं नहीं बहुत बड़ा आदमी है यह।
कद तो पांच-छः फुट ही है इसका।
अचानक पिलपिल की खोपड़ी का बल्ब भक से जल उठता है। उसकी खोपड़ी में भरे भुस में आग लगते-लगते रह जाती है।
ऐह ! मेरे गले से क्यों चिपट रिया है यार ? मेरी टाई का नॉट खराब कर रिया है।
मुझे याद आ गया यह कौन है। हमारी किस्मत खुल गई समझ ले।
यह बम्बई फिल्म का मशहूर डायरेक्टर है ऋषिकेष मुखर्जी।
तो इतना खुस क्यों हो रिया है ? यह कौन सा म्हारे लिये मोती चूर के लड्डू लेकर आया होगा।
अरे, अक्ल के दुस्मन, जरा सोच यह म्हारे पास क्यों आ सकता है ?
क्यों आ सकता है ? अपनी फिल्म के टिकिट हमको बिलैक में बेचने आया होगा।


सुन ले. इसके आने का एक ही मतवल निकल सकता है. यह अपनी नयी फिलिम के लिये हमको हीरो लेना चाहता है।
हीरो वन के तो म्हारे वड़े ठाठ रहेंगे। हमारी ऊंची हो जायेगी. तूती वोलेगी तूती ?
और क्या हेमा मालिनी की सगाई का रिश्ता लेकर थोड़े ही आया होगा। अव दुख के दिन लद गिये म्हारे !
हीरो ? वैसा ही हीरो जैसे आनन्द मां राजेश खन्ना था ? सच !
कुछ ही दिनों में हमारे आगे-पीछे कारें रहेंगी।
आगे-पीछे कारें रहेंगी तो हम सड़क क्रास कैसे करेंगे ?
लाखों में खेलेंगे हम लाखों में, एक फिलिम के बीस लाख रुपये से कम हर्गिज नहीं लेंगे।
बीश लाख रुपीया ! इतना पेशा हम कहां रखेंगे ? बोरियों मां भर के आलुओं की तरह इश्टोर में रखेंगे।
फॉरिन इम्पोर्टेड कार में हम सहर में जिधर से दनदनाते हुए निकलेंगे बिजली का लश्कारा जैसा गिरेगा। लोग ठंडी सांसें लेकर हमको देखा करेंगे।
जिन वस इश्टापों पर हम ख टांगें तुड़वाते रहें मैं उधर गुजरते वक्त लोगों को अंगू दिखाऊंगा।
आटो गिराफ लेने वाली हसीनाओं से हरदम घिरे रहेंगे।
हाउ क्यूट !
कम आन ! नाऊ डिस्पर्स ! हमको सेट पर जाना है।
अव वस वहुत हो चुका ! पुलिस को वुलाता हूं मैं।
सिर्फ एक ऑटोग्राफ और !
रोज कॉकटेल पार्टियों का तांता रहेगा
इस पेग के बाद राज साहब की पार्टी में जाना है. ओह !
फिर काका की पार्टी में जाना है। सिम्पल ने मु बीस बार फोन किया प्लीज जरूर आना। अव क करें. किसी का दिल भी ना तोड़ा जाता।


आये दिन विदेशों में शूटिंग होगी।
परवीन बॉबी की बगल मां बैठ के मारिशस जायेंगे। रास्ते में उशको अकबर-बीरबल के लतीफे सुनायेंगे।
सुबह शाम चमचों की फौज हमारे आगे पीछे परेड करेगी। फाइव इश्टार होटल मां लंच डिनर होगा।
साल में हम चार-चार वार वर्थ डे पार्टी मनायेंगे। हेमा, आशा, सिम्पल, विद्या, राखी, रेखा सब गुलदस्ते लेकर आयेंगी।
इनकम टैक्स वालों का छापा पड़ेगा। हम टैक्स नकद दे देंगे। इतना पैशा होगा कि घाटा ही नहीं पड़ेगा, चिड़ी चौंच भर ले गई नदी न घट्यो नीर ?
टा अभी से समझ ले कि हम A कलास हीरो बन गये कोई कसर नहीं ह गई। शक की गुंजाइश ही नहीं है, छाती कितनी फूल गई म्हारी ?
कोट के बटन तक टूट गिये। खैर नये कोट सिलवा लेंगे, इब परवाह काहे की है ?
यह तो हम भूल ही गिये कि बाहर कोई बैठा है। कौन बैठा है ? इबी-इबी तो नाम याद था, कौन है ?
बैठने दे ! बड़े-बड़े हीरो के दर पर लोग आठ-आठ घंटे वेट करते रहते हैं, फिर भी मुलाकालत नहीं होती।
हम भी बैठने देते हैं इसको सात-आठ घण्टे ? रौब पड़ेगा इस पर फिल्मी दुनिया में जितने नखरे दिखाओ उतनी ही कीमत बढ़ती है।
ब तो काका-फाका सब म्हारे सामने फीके पड़ गये मझ लो।
ऐसे हो जायेंगे जैसे ट्यूब लाइट के सामने मिट्टी के तेल का दीया।
न आया है बाहर कहा तूने ?
सैंकड़ों लोग आते हैं किस-किस का नाम याद रखें ?
तू बाहर जाकर इससे कह दे कि हीरो साहब अभी अपने कुत्ते से खेल रहे हैं।
मैं क्यों जाऊं ? मैं भी तो A किलास हीरो हूं तू अपना चमचा भेज।
अभी चमचे नहीं आये हैं न ! पुराने रिश्ते की खातिर तू मेरा यह काम कर दे मैं तुझे बीस लाख का चैक दे दूंगा।
फिर ठीक है।


दुनिया वालों, जराऽऽऽ होशियार, यहां के हम हैं राजकुमार। टी री री री। री री, रीऽऽ रीऽऽऽ कि रीऽऽ रीऽऽऽ हम हैं राजकुमार।
ओ बुड्ढ़े तू यहां क्या कर रिया है ? तुझे दरबान ने नहीं रोका ? तूने यह धर्मशाला समझ रखा है ?
क्या बात करता है तुम ? हम तो तुमको अपने आने वाली फीलम में कामेडियनों का रोल आफर करने आया था।
हूंह ! यह छोटे-मोटे रोल संजीव और धर्मेन्द्र वगैरह से करवाया करो, हम तो बहुत बिजी हैं बड़े बजट की फिल्मों में ? सिप्पी की पांच करोड़ रुपये की छोले है। रामानन्द शागर की दो करोड़ बजट की तरस है। गुलशन राय की एक करोड़ बजट की बीमार है। जाओ हमारे पास डेट नहीं है, हम छोटी बजट की फिल्मों में काम कर अपना इमेज बिगाड़ेंगे।
जाओ जाओ ! दफा हो जाओ, हमारा कीमती सोफा गन्दा मत करो। हमारा टाइम बहुत कीमती है, गो-गो। हूंह। चले आते हैं।
अजीब उल्लू आदमी हैं। अच्छा है इनके खराब दिमाग का पता पहले ही लग गया।
यह क्या सत्यानाश कर दिया हमने ?
बना बनाया काम बिगाड़ दिया।
गुड़ को गोबर कर दिया।
अपने ही पैरों पर कुल्हाड़ी मारी, तह अब क्यों आयेगा ?
घर आई किस्मत को धक्के दे दिये
वह लौट के नहीं आयेगा।
रोना आ रिया है।
यह सब तेरी वजह से हुआ। बगैर सोचे मुँह खोल देता है।
उपज तो तेरे दिमाग की थी। इसका आज मैं तबला बजा कर ही रहूंगा।

ष्ठ १५ से आगे

म्भव उसका रास्ता रोको ।

—राव रतन

उसे कोई आश्चर्य नहीं हुआ क्योंकि ह जानता था कि मृगा के रूप की चमक से यहां तक खींच कर ले आयेगी। वह न्तजार करने लगा। दिन ढलते ही शेरसिंह निकों सहित आ गया। आते ही वह सीधा हल की ओर बढ़ा। लोग जगह-जगह नाफूंसी कर रहे थे। एक जगह एक हट्टा-ट्टा व्यक्ति बोल पड़ा—

'रावकुमार के श्वसुर आ रहे हैं।'

वह रुका और दग्ध नेत्रों से कहने वाले ी ओर देखा।

'क्या कहता है ?'

'ठीक ही कहता हूं। जाकर अपनी बेटी पूछ लेना।'

वह घोड़े से उतर कर कहने वाले व्यक्ति पास तक आया अपनी तलवार निकाल स पर टूट पड़ा। इतने में और लोग बीच आ गये।

'सरदार इसे छोड़ दो अपनी बेटी से छ कर फिर इसको सजा देना। यदि यह ठा साबित हुआ तो हम स्वयं इसकी गर्दन लग कर देंगे।'

उसने तलवार म्यान में रख ली और न्त होकर वहां से चला गया। अब वह हल की ओर जाना छोड़ हवेली की ओर ा। हवेली के अन्दर पहुंच कर वह जोर चीखा।

'मृगा ! मृगा !!'

'आई बाबूजी।'

वह भागी भागी आई। रोज की तरह ा ने उसका स्वागत नहीं किया। वह कित नेत्रों से उसकी ओर देखने लगी।

'तुम चार दिन कहां थीं ?'

मृगा यह प्रश्न सुन कर सहम गई।

'बोल, बोलती क्यों नहीं?' वह कड़का।

'कुमार के पास थी।'

'क्या कर रही थी ?'

उसने गर्दन झुका ली।

'पिता जी, मैं उन्हें अपना पति मान ी हूं।'

'क्या !!!' वह बड़ी जोर से चीखा।

'मृगा ! तुमने मेरी सारी आशाओं पर ी फेर दिया। मेरी ममता, स्नेह, प्यार यह कीमत चुकाई ?'

'क्या मुझसे कोई गलती हुई ?'

'नहीं, गलती मेरी थी कि मैंने तुम पर ास किया, तुम्हें स्वच्छन्द वातावरण में ा, कभी तुम्हारी इच्छाओं का खून नहीं किया। और तुमने मुझे यह उपहार दिया। गली-गली, हर घर में मेरी बदनामी हो रही है। तुम जानती हो कि हमारे पूर्वजों का साम्राज्य हड़प कर आज यह हाड़ा जिन्हें हम नीच समझते थे हमारे पूर्वजों के शासन को भोग रहे हैं। एक मीणा सरदार की लड़की कभी हाड़ा वंश के युवक का वरण नहीं कर सकती।'

'हिन्दू स्त्री, पिताजी एक ही बार अपने पति को चुनती है।'

'मैं निश्चय कर चुका हूं कि तुम भले ही सारी जिंदगी कुंवारी रहो पर यह नहीं हो सकता। तुम आज से घर के बाहर नहीं निकलोगी।' वह क्रोध में अपने कमरे की ओर बढ़ गया।

रात को शेरसिंह की नींद शोर को सुनकर खुल गई। कई मशालें गोपी के महल की की ओर बढ़ रही थीं। गांव वाले घोड़े के टापों की आवाज सुनकर जाग उठे थे और वही शोर कर रहे थे, उन्होंने सोचा दरियाव आ गया। शेरसिंह चुपचाप तलवार ले महल की ओर बढ़ गया। जब तक वह महल पहुंचा तब तक वहां लड़ाई छिड़ चुकी थी, वह अभी तक समझ नहीं पाया था कि यह कौन है। किन्तु उसकी द्विविधा खतम हो गई। जब उसने गोपी के कक्ष के अन्दर से आवाज सुनी। वह कान लगाकर सुनने लगा। बाहर अंधकार में मार-काट मची हुई थी। सो यही अन्धकार उसके लिए सहायक बना हुआ था।

'ओह ! छत्रसिंह तुम आ गये।'

'हां फैसला करने आया हूं।'

'होगा ! होगा !'

फिर तलवारें झनझनाने की आवाज आने लगी। काफी देर आवाजें आती रहीं। उसने भिड़े हुए दरवाजे को थोड़ा-सा खोल-कर झांका। अन्दर छत्रसिंह और गोपीनाथ आपस में गुंथे हुए थे। देखते ही देखते छत्रसिंह ने गोपीनाथ को जमीन पर पटक कर तलवार उसके सीने के दाहिनी ओर पार कर दी।

'बस इतनी ही हिम्मत थी हाड़ा वंश की।'

और वह दरवाजे की ओर जाने के लिए बढ़ा। शेरसिंह दरवाजे से हट गया। उधर गोपीनाथ ने क्षीण शक्ति से कमर की कटार निकाल कर और अन्तिम पूर्ण शक्ति से बाहर जाते छत्रसिंह की ओर फेंकी। कटार पूरे फल तक छत्रसिंह की पीठ में घुस गई। कटार की फल विष में बुझी हुई थी सो वह वहीं पर गिर पड़ा। शेरसिंह ने छत्रसिंह को बाहर निकलते न देखकर फिर झांका तो वह स्तब्ध-रह गया। वह तो निश्चेष्ट-सा जमीन पर पड़ा हुआ था। वह दरवाजा पूरा खोल कर अन्दर आ गया। आकर छत्रसिंह की नब्ज देखी। वह मर चुका था। फिर वह गोपीनाथ के पास आया। उसकी नब्ज चल रही थी। उसने कुछ विचार किया। और दूसरे ही क्षण उसने तलवार गोपीनाथ के ठीक सीने के पार कर दी। बाहर से सैनिक आ गये। सबसे आगे वाले सैनिक ने मीणा सरदार का कृत देख लिया था सो उसने उसे ललकारा। फिर जमकर लड़ाई हुई। वह उनको चीरता हुआ घायलावस्था में अपनी हवेली की ओर बढ़ गया।

'मृगा ! मृगा !' उसने आवाज दी।

मृगा भागी-भागी अधनींदी-सी आई उसकी हालत देखते ही वह चीख पड़ी।

'यह क्या बाबू···?'

'मैंने गोपी को समाप्त कर दिया।'

'नहीं ! नहीं ! यह नहीं हो सकता, अपनी बेटी का सुहाग अपने हाथों नष्ट कर दिया।'

'हाड़ा वंश का कोई···।' 'वह गिर पड़ा।'

फिर मृगा ने उसकी सेवा सुश्रूषा की। बाहर पूरा गांव राव देवा की जयजयकार से गूंज उठा। मृगा हैरान रह गई। वह भागी आई और खिड़की खोल बाहर झांकने लगी। कई आवाजें आयीं।

'दरियावखां पकड़ लिया गया।' राव देवा अपने महल में आये। जब वहां सैनिकों से उन्हें सारी घटना का पता चला तो उनके मुंह से निकल गया।

'आखिर फाल्गुन मास ने एक बलि और ले ली।' मंत्री जी पूरे राज्य में शोक मनाने को कह दिया जाय, और चिता का प्रबन्ध किया जाये। दरियावखां पर हमारा विजय की खुशी ने हमें शिकस्त दिखा दी··· जिन्दगी की सबसे बड़ी शिकस्त।'

सारी तैयारियाँ हो गईं। मंत्री जी ने हाथ जोड़कर कहा।

'महाराज, एक सैनिक मिलना चाहता है।'

'भेज दो।'

सैनिक ने आकर राव रतन की जय बोलकर तीन बार कोर्निश की, किन्तु राव रतन ने कोई ध्यान नहीं दिया, उन्हें तो पुत्र शोक ने विव्हल कर रखा था।

'महाराज असली कातिल को मैं जानता

हूं।'

'क्या ???' राव रतन चौंके ।

'जी हाँ महाराज, असली कातिल शे
सिंह है।'

'कौन ? मीणा सरदार।'

'जी हाँ।'

इतने में मन्त्री जी ने आकर सूचि
किया, 'महाराज सारी तैयारी पूर्ण है।'

फिर महाराज स्वयं आये। चिता क
निरीक्षण किया गया। और फिर स्वयं रा
रतन ने चिता पर आग लगा दी। चिता क
लपटें आकाश का छूने की कोशिश कर
लगीं। चन्दन और घी ने नश्वर देह क
जल्दी-जल्दी राख करने की कोशिश की
इतने में एक युवती आई। और जब त
लोग उसे रोकते वह उस चिता में कूद पड़ी
अगले ही क्षण आग की लपटों ने उसे भ
अपने अंक में समेट लिया। पीछे-पीछे घाय
शेरसिंह भी रोता कलपता आया। राव रत
ने क्रुद्ध नजर से उसकी ओर देखा।

'अब क्या रखा है शेरसिंह ?'

शेरसिंह भी सिसक पड़ा, वह फूट-फू
कर रोने लगा।

'महाराज अब कुछ भी नहीं है। मेरी
बेटी ने अपने सुहाग को अमर कर दिखाया
मैं कातिल हूं, मैंने राजकुमार का ख़ून किया
अपनी बेटी के सुहाग को नष्ट कर उसे चित
की शरण लेने को विवश कर दिया। मैं बा
नहीं, मैं झूठी मान-मर्यादा की शान में ब
गया था। मुझे फांसी दीजिये।'

इतने में सिपाही चीखे।

'कत्ल कर दो ! युवराज के कातिल
को भी इसी चिता में झोंक दो। कुत्तों
नुचवाओ।'

राव रतन ने कहा—'आप सब शान्त
हो जाइये।' इतने में शेरसिंह चिता की ओर
लपका कि राव रतन ने अपनी विशाल बांहों
में उसे बाँध लिया।

'मुझे मरने दीजिये महाराज ! मुझे
अपने पाप का प्रायश्चित करने दीजिए।'

'नहीं ! तुम्हारा मन सच्चा पश्चाताप
कर रहा है। तुम्हारा स्वयं का हृदय, तुम्हें
धिक्कार रहा है। अपने किये गये कार्य प
तुम्हें स्वयं ग्लानि हो आई है। यही तुम्हार
प्रायश्चित है। मेरे साथ मिलकर रणस्थल
में जूझकर बाकी प्रायश्चित कर लेना।'

'महाराज !' और उसने राव रतन के
कदम पकड़ लिये। उनके पैरों पर लो
गया। जन-समूह तथा अन्य सैनिकों ने रा
रतन की जय-जयकार से आकाश गूंजा दिया

निर्देशक-भप्पी रोनी
निर्माता-श्याम केश पानी
तथा गंध मीरानी
संगीत-आधी बर्मन
गीत-आनन्द पक्षी



पात्र-परिचय

रंजधीर कपूर – सनूप
अहाशोक कुमार – डा० थर्मा
कामिनी काशल – लोजी
करुणा पीरानी – गंजू
परवीन पापी – सूपा
रणचीट – रावी
मटन-पूरी – चौनी
नागिरा – शार्का

लीजिये साहब, गुलशन फंदा के घासलेटी नावल फैक्ट्री से निकले एक और चकल्लस नावल पर घासलेटी फिल्म डायरेक्टर द्वारा घासलेटी अभिनेता-अभिनेत्रियों को लेकर बनाई एक और सिरदर्द । इस फिल्म को देख इतने जोर का सिर दर्द होगा कि दिल करेगा जाकर भंवर में कूद पड़ो और जान दे दो ।




बगैर पत्र के जीना भी कुछ नहीं ! मैं खुद अपने नाम पत्र लिखती हूं ताकि लड़कियां मेरा मजाक न उड़ायें ।
सूपा को भी एक चिट्ठी आई है, कितनी हैरानी की बात है ।
जरूर डैनी की चिट्ठी है या अदालत का समन होगा । इसे मैल पूरी खिलाने पर डैनी ने जो पांच-छः सौ रुपये खर्च किये हैं उसका दावा कर रहा होगा ।
शक है तो देख लेना ।
यह पत्र एक प्रिंस का मुझे सोवराय में मिलने लिये लिखा है ।
देखिये, मैं एक मुसीबत में फंस गई हूँ, मेरी सहेलियां...
आपने मुझसे देखिये कहा ? माफ की मैं देख नहीं सकता, आप देख रही ह कि मोटापे के कारण मेरी दोनों आ बन्द हो गयी हैं । जम्बूर लाकर खो तो देखूं ।
आप आंखों में चर्बी भरने के कारण देख नहीं पाते ! यह तो और भी अच्छा है, मैं बैठ कर आपके साथ खा-पी भी लूं तो भी आपको पता नहीं चलेगा, कम से कम बिल आने तक !
अब मैं तुम्हारे बगैर जी नहीं सकता । आज ही अपनी बहन शार्का को भेज रिश्ता तय कराता हूँ ।
तुम मेरे बगैर जी नहीं सकते ? इसका मतलब तुम मुझे बेइन्तहा प्यार करते हो ।
नहीं, मैं अपनी आंखें तो खोल नहीं सकता नजारे देखने के लिये दूसरों की कमेंट्री पर निर्भर हूं । तुम इतनी अच्छी कमेंट्री देती हो जैसे जसदेव सिंह हॉकी कमेंट्री देता है, इतनी अच्छी कमेंटेटर मुझे और नहीं मिलेगी ?
चलो क्रिकेट और हॉकी की कमेंट्रियां सुनने का व्यावहारिक जीवन में मुझे लाभ तो हुआ ।



वाह ! आज तो घर साफ-सुथरा है । वर्ना महीने में एक बार भी झाड़ू नहीं लगता, क्या कोई खास बात है आज ।
मेहरबानी करके तुम चले जाओ । आज सूपा का रिश्ता तय करने कुछ लोग आ रहे हैं ।
रोज तुम दस रुपये देती हो । आज पचास लिये बिना नहीं जाऊंगा, वर्ना मैं उन लोगों को बता दूंगा ।
क्या बताओगे ? यही कि सूपा जुआ खेलती है, सिगरेट पीती है ! यह तो उनको भी पता है असल में वह घर में तीन हैं । सूपा से शादी ही इसलिये तय करना चाहते हैं ताकि वह चार हो जायें और ब्रिज खेल सकें ।
नहीं मैं बता दूंगा कि सूपा को गुड़ खाने की आदत है ।
गुड़ गोबर कर दिया ।
तो आपने सुन लिया कि सूपा गुड़ खाती है । गुड़ खाने वाली बहू घर में कौन लाना चाहेगा । अगर आप मुझे पांच हजार रुपये दे दें तो मैं सूपा को सनूप के रास्ते से हटा दूंगा मैं सूपा को बस का दूसरे रूट का पास लाकर दे दूंगा ।
ठीक है, सौदा मंजूर हैं । सनूप की शादी गुड़ खाने वाली लड़की से नहीं हो सकती । आजकल गुड़ राशन कार्ड पर भी नहीं मिलता है । मुझे भी गुड़ खाने की आदत है । सनूप किस-किस के लिये गुड़ लाता रहेगा ? किसी दिन चींटियां उस पर हमला कर देंगी और उसे चट कर जायेंगी ।
बेचारी लड़की कार के नीचे आ गयी । जरूर यह अपनी बीमार मां के लिये दवा ले जा रही होगी तभी इतनी जल्दबाजी !
जब कहानी में मोड़ लाने का आइडिया नहीं आया तो उसने अपनी कार ही मोड़ ली । सोचा होगा चलो कुछ न कुछ तो मोड़ो ।
यह जो कार इसे कुचल कर गयी है कोई इसका नम्बर नोट करो, कौन है यह खूनी ?
पहचाना नहीं ? यह तो गुलशन फंदा की कार थी, वही जिसने यह नॉवल लिखा है ।
नहीं यह तो चाट वाले के पीछे भाग रही थी ।
कहानी में मोड़
देने के लिये ही
टांग में चोट


आई एम सॉरी ! इसकी टांग बेकार हो गयी है, इसे काटने के सिवा कोई चारा नहीं।
बस, बस, बस ! फिलहाल टांग काटने की जरूरत नहीं है ?
डाक्टर साहब मेरी टांग मत काटिये। मैं एक हीरोइन हूं, टांग कट जायेगी तो दौड़-दौड़ कर युगल गान कैसे गाऊंगी ? मेरा पति गलती होने पर मेरे पैरा पकड़ना चाहेगा उसकी आधी चाहत ही पूरी होगी और कहावत भी है कि झूठ के पैर नहीं होते। मेरा एक पैर नहीं होगा तो लोग जो कुछ मैं कहूँगी उसका आधा यानि पचास प्रतिशत झूठ समझेंगे। एक टांग कम होगी तो पड़ौसियों के मामले में टांग कैसे अड़ाऊंगी और......
पहले इसकी ज़ुबान काटनी पड़ेगी, फिर टांग !
हियर ! हियर !!
दीदी मैं तो सूपा से ही शादी करूंगा ?
फिर सोच लो सनूप ! डाक्टर ने उसकी जुबान नहीं काटी है, तू यह सोच रहा होगा कि कटी जुबान वाली बीवी मिलेगी। वह लड़ाई झगड़ा नहीं कर पायेगी, उसकी एक टांग ही कटी है ?
मेरा इरादा अटल है ?
इस समाचार से कि सूपा की जुबान नहीं कटी धक्का तो मुझे काफी लगा। लेकिन चलो एक टांग कटी है वही काफी है। कटी टांग वाली बीवी के भी कम फायदे नहीं हैं। मैं बहुत जल्दी विश्व प्रसिद्ध आदमी बन जाऊंगा, लोग यह समझेंगे कि मैंने ही इसकी टांग तोड़ी है। इस प्रकार मैं शायद दुनिया में पहला पति बन जाऊंगा जिसे बीवी की टांग तोड़ने का श्रेय होगा। दुनिया के पति जगत में मेरी जय-जय कार होगी, रिकार्ड बुकों में नाम आयेगा ?



दीवाना तेज फ्रैंड्स क्लब



सैयद कमरुद्दीन ग्रहमद, ६९ शब्बवारा, उन्नाव, १३ वर्ष, शतरंज खेलना, दीवाना पढ़ना, भूत प्रेतों की कहानी पढ़ना ।



शहीद जमाल सिद्दीकी ६३/२ नाजनीन लाइब्रेरी, खैरनगर, ग्रमीर रोड, मेरठ, २१ वर्ष, क्रिकेट खेलना, फिल्म देखना ।



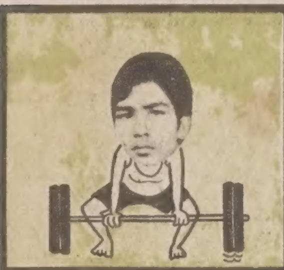
जी. एन. मिश्रा 'राकेश', लाइटों एण्ड कं०, ३३-२३७ मेस्टन रोड, कानपुर-१, १६ वर्ष, गाने गाना, कविता कहानी लिखना ।



सुरेन्द्र चुघ, गली धन्नुमल, म. नं. ५२२, मुक्तसर (पंजाब), १८ वर्ष, चिल्ली से लव करना, पत्र-मित्रता करना ।



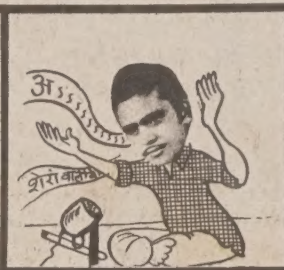
धर्मेन्द्र पमरीचा, कालोनी, करनाल, खेलों में भाग लेना



मोहन ग्रग्रवाल, पोस्ट ग्रार ग्राई., डिगवाडीह १०, धनबाद, १४ वर्ष, व्यायाम करना दीवाना पढ़ना ।



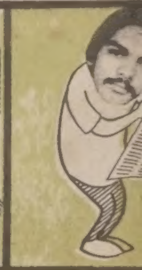
देवेन्द्र सिंह स्याल, ग्रमणा नगर, एटा, ५०, १६ वर्ष, लड़ाई लड़ना, फिल्म देखना, घूमना-फिरना ।



राज राजस्थानी, म. नं. २०५६, गली ग्रखाड़े वाली बाजार सीताराम दिल्ली-६ २० वर्ष, जागरण करना, मांनै की तितलियां पकड़ना ।



प्रकाश कुमार श्रेष्ठ, ६/२६६ खिचा पोखरी, काठमांडू-६ १८ वर्ष, खेल कूद में भाग लेना, फिल्मी कलाकारों से फोटो मंगवाना ।



रमाकान्त निगम, (म. प्र.) १६ वर्ष, पढ़ना, चुटकुले सुना



विद्य विजय 'बैरागी', चिमापानी, हेटोंडा-८ नेपाल, १६ वर्ष, फैशन करना, लड़कियों का पीछा करना ।



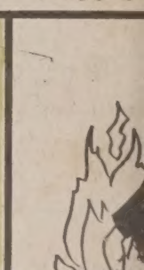
पी. एम. वेंकटेर, द्वारा पी. वी. एम. कृष्ण, बगला यार्ड, बिलासपुर (म. प्र.), १५ वर्ष, क्रिकेट खेलना, फिल्म देखना ।



रवि मनचन्दा, सेक्टर-५, १३४८ ग्रार. के. पुरम नई दिल्ली, १८ वर्ष, खेल खेलना, उपन्यास पढ़ना ।



सुरेन्द्र नागिया, मकान नं० १२१, सी-४, नई दिल्ली, २२ वर्ष, कसरत करना, कुश्ती लड़ना, खाना-पीना ।



राजीव नागिया, सेक नई दिल्ली, १७ वर्ष होना, जंगलों में चक्क



एम बिलाल, ग्रलीगढ़ नाक मार्किट, बोहरा मस्जिद रोड इतवारी नागपुर, २२ वर्ष, सिनेमा देखना ।



मुणोल मक्षीजा, एम-५ १३३५, २२ वर्ष, पतंग उड़ाना, बच्चों को डांस सिखाना, दीवाना पढ़ना ।



महेन्द्र लूथरा, ग्रखिल भारतीय रेडियो श्रोता संघ, बी ७४ राणा प्रताप बाग, दिल्ली, २१ वर्ष, पत्र मित्रता ।



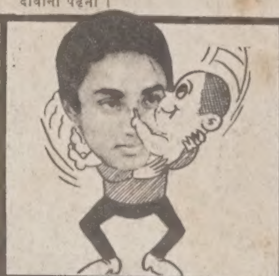
सुरेन्द्र सिंह गांधी, ३ ई/२ झण्डेवालान, नई दिल्ली, २६ वर्ष, मां बाप की सेवा करना, सिनेमा देखना, दीवाना पढ़ना ।



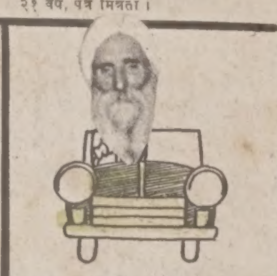
योगेश संघ्वी जैन, बेरमो गिरीडिह २१ मित्रता, घूमना ।



चन्द्रभान ग्रग्रवाल, पो. लैलूंगा (रायगढ़), (म. प्र.), १५ वर्ष, कम तोलकर देना, भूतों से दोस्ती करना ।



संजीव कुमार श्रेष्ठ, विराटनगर-५ (नेपाल), १६ वर्ष, बच्चों से खेलना, बड़ों का ग्रादर करना, झूठ बोलना ।



गोपाल सिंह 'गिल', शेरपुरा रोड जगराग्रो, ७० वर्ष, कार के बीच बैठकर पढ़ना ग्रौर कार चलाना ।

दीवाना तेज फ्रैंड्स क्लब के मेम्बर बन कर पेन फ्रेंडशिप फोटो छपवाइये । मेम्बर बनने के लिए कूपन भर कर ग्रपने पासपोर्ट के साथ भेज दीजिए जिसे दीवाना तेज साप्ताहिक में प्रकाशित क लिफाफे के कोने पर 'पेन फ्रेंड' लिखना व फोटो के पीछे ग्रपना पूरा ना

हमारा पता :-दीवाना तेज साप्ताहिक
८-ब बहादुरशाह जफर मार्ग नई दिल्ली-१
कृपया ग्रपना नाम व पता हिन्दी में ही साफ-

नाम__________

पता__________

ग्रायु______ शौक______

करो बकवास


हाय-हाय ये मजबूरी यह मौसम और यह दूरी !
बन्द करो बकवास, तुम्हें किसने कहा था कि ऐसे मौसम में इतनी कस के साड़ी बांधो !
बरसात में हमसे मिले तुम रे सजन, तुम से मिले हम !
बन्द करो बकवास, इससे तो अच्छा था कि मैं किसी रोड-रोलर से मुलाकात कर लेता !
जिन्दगी भर नहीं भूलेगी वो बरसात की रात, एक अनजान हसीना से मुलाकात की रात !
DOCTOR
बन्द करो बकवास, और गाना गाना ही है तो ठीक से गाना गाओ, और कहो एक अनजान हसीना की छतरी से मुलाकात की रात !

साप्ताहिक भविष्य

पं० कुलदीप शर्मा सुपुत्र दैवज्ञभूषण पं० हंसराज शर्मा

१२ जुलाई से १८ जुलाई १९७६ तक

मेष : इन दिनों में वातावरण में पहले से सुधार तो होगा फिर भी राजपक्ष से कोई न कोई चिन्ता लगी रहेगी, फिर भी अधिक परेशानी की कोई बात नहीं है, प्रियजनों की मदद से आप हर मुश्किल आसान कर लेंगे।

बृष : यह सप्ताह आपके लिए काफी लाभ-प्रद रहेगा, क्योंकि आप इस दौरान में कई मुश्किल समस्याओं का समाधान बहुत ही आसानी से कर पायेंगे, सरकारी कामों में सफलता मिलेगी, वाद-विवाद में विजय होगी।

मिथुन : इन दिनों में आप कुछ राहत ही महसूस नहीं करेंगे, अपितु कई कार्यों को पूरा भी कर सकेंगे, दैनिक कामों में समय सानन्द व्यतीत होगा, व्यापार में भी सुधार होगा, स्वभाव में गुस्सा रह सकता है।

कर्क : दिन अभी नेष्ट ही चल रहे हैं, हर प्रकार से सतर्क होकर चलें, विरोधी दल आपको किसी भारी चक्कर में डाल सकता है, परन्तु उसमें आपको कोई विशेष हानि न होगी।

सिंह : यह सप्ताह आपके लिए तकरीबन ठीक ही व्यतीत होगा, कारोबार की स्थिति संतोषजनक चलेगी और समय अनुसार आम-दनी प्राप्त होती रहेगी, पिछले दिनों में बनी किसी विशेष उलझन का खात्मा होगा।

कन्या : बेशक हालात इन दिनों में आपके वश में रहेंगे और आप हर प्रकार से अच्छा समय गुजार सकेंगे परन्तु ऋण सम्बन्धी कार्य करना आपके लिए उचित नहीं है, शत्रु परास्त होंगे, परिश्रम करने पर सफलता नसीब होगी।

तुला : बन्धु या मित्र द्वारा साहस बढ़ेगा, किसी विशेष समाचार के मिलने पर यात्रा भी हो सकती है जो सफल भी रहेगी, व्यय अधिक ही होगा, फिर भी आमदनी निश्चय ही अच्छी हासिल होगी।

बृश्चिक : अधिक समय दैनिक कामों में ही व्यतीत होगा, वातावरण भी साजगार रहेगा, सप्ताह काफी लाभप्रद रहेगा, यदि आप कोई नई योजना शुरू करने का विचार रखते हैं तो कर लें, दिन अच्छे हैं, सफलता मिलेगी।

धनु : पिछले सप्ताह की तरह से ही यह सप्ताह व्यतीत होगा, फिर भी जहां आप कुछ एक कामों में नवीनता महसूस करेंगे, वहां पर व्यापारिक कामों में परेशानी भी हो सकती है।

मकर : इन दिनों में आप विशेष उन्नति महसूस करेंगे और साजगार वातावरण में प्रवेश करेंगे, कारोबार में रुचि कम तो रहेगी परंतु जो उतार पिछले दिनों में आया था उसे आप अवश्य ही पूरा कर लेंगे।

कुम्भ : आर्थिक परेशानी पैदा होने के कारण पारिवारिक हालात में भी अशान्ति रह सकती है, व्यय अधिक होगा, आमदनी आशा से कम, फिर भी साहस शक्ति सुदृढ़ रहेगी और आप इन मुश्किलों का सामना कर सकोगे।

मीन : कर्जे सम्बन्धी कोई भी कार्य इन दिनों न करें तो बेहतर है वर्ना रकम डूब सकती है, कारोबार से यथार्थ आमदनी प्राप्त होगी, बन्धुजनों का सहयोग लाभप्रद सिद्ध होगा, शत्रु पर विजय होगी।

खलनायक से नायक तक

शत्रुघन सिन्हा



● शत्रुघन सिन्हा से किसी ने धीरे से पूछा, 'क्या आप पटना के रहनेवाले हैं ?, तो शत्रुघन सिन्हा ने मुस्कराते हुए जवाब दिया, 'रहने वाला तो पटना का ही हूं लेकिन आसानी से पटने वाला नहीं हूं।'

शत्रुघन सिन्हा का जन्म ९ दिसम्बर सन् १९४५ को पटना (बिहार) में हुआ। प्रारम्भिक शिक्षा प्राप्त करने के बाद शत्रुघन सिन्हा ने पटना के एक स्थानीय उच्चविद्यालय से बी. एस. सी. की डिग्री प्राप्त की। अपने कालेज के जीवन में शत्रुघन सिन्हा नाटकों व ड्रामों में खुलकर भाग लेते थे और इनकी रुचि भी इसी ओर केन्द्रित थी।

अपने मित्रों का प्रोत्साहन व माता-पिता का सहयोग पाकर शत्रुघन सिन्हा ने पूना फिल्म इन्स्टीट्यूट में दाखिला ले लिया। कुछ ही दिनों के बाद फिल्म इन्स्टीट्यूट के अन्य क्षेत्रों में यह कानाफूसी होने लगी कि शत्रुघन, जिसके होंठ के नीचे इतना लम्बा निशान है, भला क्या हीरो बन सकेगा? लेकिन इसी निशान की वजह से शत्रुघन सिन्हा फिल्म 'प्रेम पुजारी' में विलेन बन गये। नायक ना सही खलनायक ही सही। शत्रुघन सिन्हा ने किसी भी रोल को कभी छोटा नहीं समझा और उसमें पूरी लगन के साथ काम किया। फ़िल्म 'प्रेम पुजारी' रिलीज़ हुई और पिटी, लेकिन शत्रुघन खलनायक के रूप में हिट हुआ। फिल्म 'खिलौना' में शत्रुघन सिन्हा ने एक एक्स्ट्रा के रूप में कार्य किया और दर्शकों पर अपनी छाप छोड़ दी। फिल्म 'मेरे अपने' में विनोद खन्ना के साथ सह कलाकार की भूमिका निभाई। यह फिल्म कालेज के छात्रों के ऊपर आधारित थी। फिल्म 'ब्लैकमेल' में खलनायक की भूमिका निभाई और दर्शकों के दिमाग में खलनायकों की लिस्ट में प्राण के बाद शत्रुघन सिन्हा का नाम गूंजने लगा। लेकिन यह दौर अधिक दिन नहीं चला। खलनायक के बाद शत्रुघन सिन्हा का नाम नायकों की लिस्ट में ट्रांस्फर हो गया। शत्रुघन सिन्हा ने नायक के रूप में कई फिल्मों में काम किया। 'कुन्दन', 'मिलाप', 'एक नारी दो रूप', 'गाय और गौरी', 'शैतान', 'बदला', 'दो ठग' आदि उल्लेखनीय फिल्में हैं जिसमें शत्रुघन ने बतौर नायक की भूमिका निभाई।

वैसे आप किसी फिल्म दर्शक से शत्रुघन सिन्हा के बारे में पूछें तो हो सकता है वह यह कह बैठे:—

शत्रुघन सिन्हा एक 'नामी चोर' है उसके 'दो शत्रु' हैं। एक तो 'कोतवाल साहब' और दूसरा 'थीफ-आफ-बगदाद'। शत्रुघन सिन्हा ने भी 'चम्बल की कसम' खाकर ऐलान किया है कि वह अपने पुराने 'पापी', 'दो ठग' जिन के नाम 'सोनू और मोनू' हैं और जो 'शैतान' की तरह मशहूर हैं, के साथ मिलकर इन दोनों को 'ब्लैक मेल' करके 'बदला' लेगा। एक 'आदमी सड़क का' शत्रुघन सिन्हा से बोला कि आप पहले 'दोस्त', 'खान दोस्त' की मदद से कोई 'समझौता' कर लो। लेकिन शत्रुघन सिन्हा जी अभी भी 'कशमकश' में उलझे हुए हैं।

आप किसी उलझन में मत उलझिये ये शत्रुघन सिन्हा की ही फिल्मों के नाम हैं इनमें से कुछ फिल्में आ चुकी हैं और कुछ आने की तैयारी में हैं। इसके अतिरिक्त इनकी आने वाली अन्य फिल्मों के नाम हैं 'या[illegible] मेरी जिन्दगी', 'पापी' व 'गौतम गोबिन्दा'।

शत्रुघन सिन्हा
'रामायण' नवा रास्ता
जुहू पार्ले स्कीम
बम्बई—४०००५४

विजय भारद्वाज

तेज प्रेस नया बाजार दिल्ली में तेज प्राइवेट लिमिटेड के लिए [illegible] लाल जैन द्वारा मुद्रित एवं प्रकाशित। प्रबन्ध संपादक [illegible]